पड़ोसन

हिंदी हास्य नाटक

रामामन जायसवाल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ramaman Jaiswal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-416-1

Cover Illustration: Aditya
Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: May 2026

मेरे स्वर्गवासी पिता और प्रिय माता के लिए।

~ विशेष विवरण ~

जातिवाद - एक ऐसा बीज जिसे अंग्रेज़ों ने १५५ साल पहले भारत की मिट्टी में गाड़ा था। ताकि उस समय एक परिवार की तरह एकता से रहने वाले भारतीयों को भिन्न-भिन्न उप-जातियों में विभाजित कर, उनकी एकता को तोड़ सकें और यहाँ शासन कर सकें। अब भले ही उनकी 'डिवाइड एंड रूल' नीति में 'रूल' तो मुमकिन न हो पाया था, लेकिन हमें 'डिवाइड' करके हमारी एकता तो तोड़ने में वे सफल रहे। और आज इस 'आधुनिक भारत' को देखकर लगता है कि अंग्रेज़ों द्वारा बोया गया वह बीज आज एक फलता-फूलता पेड़ बन चुका है। आज स्थिति यह है कि लोग अपने जाति और धर्म को ऊंचा रखने के लिए उपहास, कायरता और नफरत जैसे बंधनों का सहारा ले रहे हैं, तथा मारने-कटने को तैयार खड़े हैं। पर सवाल यह उठता है कि, क्या अंग्रेज़ सिर्फ हमारी एकता तोड़ना चाहते थे? इतिहास में ऐसे कुछ और भी दुष्कृत्य थे, जिनका उद्देश्य बस हमारे प्राचीन ज्ञान को मिटाना था। वह ज्ञान जो प्रेम, ईमान और दया सिखाता था। इस प्राचीन ज्ञान को बचाने के लिए कई महान पुरुषों ने कठिन संघर्ष भी किए; प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के महान योगी 'शंकराचार्य जी', जिन्होंने उपनिषदों से चार मुख्य महावाक्यों को रेखांकित कर वैदिक अध्ययन के पतन का प्रतिकार किया—लौह काल के 'चंद्रगुप्त मौर्य' और प्रारंभिक आधुनिक युग के 'छत्रपति शिवाजी महाराज' जैसे शूरवीर, जिन्होंने प्राचीन ज्ञान और भारत की एकता को बचाने के लिए खून की नदियाँ बहा दी थीं—ब्रिटिश काल के महान दार्शनिक, 'स्वामी विवेकानंद जी', जिन्होंने वेदांत को केवल एक धर्म के बजाय एक सार्वभौमिक दर्शन के रूप में न केवल भारत में बढ़ावा दिया, बल्कि उस समय के दुश्मन देश को भी एक शिक्षक के तौर पर वेदांत का

सही अर्थ समझाया और परस्पर आदर की अपील की। या फिर 'बाबा रामचंद्र दास जी', जिन्होंने ज्ञान की किताब को अपनी पीठ पर बांधकर पूरे अवध में पदयात्रा की, ज्ञान का प्रचार किया और अंग्रेज़ राज से मुक्ति का साहस जगाया। बीते काल में ऐसे कई महान पुरुषों ने जन्म लिया, जिनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बस भारत के प्राचीन ज्ञान और सभ्यता को बचाना था। पर समय का चक्र उनका सबसे बड़ा विरोधी निकला, और वह सदियों पुराना ज्ञान १५० साल पहले धरती से विलुप्त हो गया। पर, 'पन्ने और इंसान को जलाया जा सकता है... लेकिन ज्ञान अमर है!' और ज्ञान ही एकमात्र हथियार है, जिसके दम पर हम जातिवाद से मुक्त हो सकते हैं।

प्रस्तुत नाटक किसी भी जाति, धर्म या संस्कृति को नीचा दिखाने या उसका उपहास उड़ाने के मकसद से नहीं लिखा गया है। यह नाटक बस देश में चल रही अलग-अलग समस्याओं और गुजरते कुदृष्ट माहौल को एकांकित कर, इसे हास्य रस के माध्यम से दर्शाता है और खुद इसकी घोर निंदा करता है। जहाँ यह सब माहौल न केवल इंसान को शारीरिक रूप से कमजोर बना रहा है, बल्कि मानसिक रूप से भी उन्हें खोखला कर उनमें उत्तेजना भर रहा है। जिसके कारण वह सामने वालों को तो गहरी चोट पहुँचाता ही है, लेकिन इसके साथ वह खुद अपना भी अंत निश्चित कर लेता है। यह नाटक किसी भी मान्यता, वस्तु या इंसान की उपस्थिति होने का दावा नहीं करता है। नाटक के सभी पात्र और हो रही घटनाएँ केवल काल्पनिक हैं।

~ लेखक के बारे में ~

रामामन जायसवाल (अमन जायसवाल) कोलकाता के एक प्रख्यात रंगकर्मी हैं। इनका जन्म ८ अप्रैल १९९२ को कोलकाता में हुआ था। २०१४ में इन्होंने अपनी महाविद्यालय की पढ़ाई छोड़कर कला से पूरी तरह जुड़ने का निर्णय लिया और अपने अभिनय करियर की शुरुआत उन्होंने कोलकाता के प्रतिष्ठित नाटक दल 'पदातिक' से की। इसके बाद, कोलकाता और मुंबई के कई छोटे-बड़े दलों के साथ जुड़कर, उन्होंने दो दर्जन से भी अधिक नाटकों में अभिनय किया है। २०१७ में उन्होंने अपना नाट्य समूह 'ब्लैक कर्टेन थिएटर' स्थापित किया, जहाँ उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक रंगमंच का संयोजन करते हुए १५ से अधिक प्रभावशाली नाटकों का निर्देशन किया, और कई छोटे, बड़े नाटक भी लिखे। जिनमें से उनके द्वारा लिखा गया 'अब्सर्ड ड्रामा—लॉक्ड एंड की' के लिए २०२१ में उन्हें दिल्ली के एक रंग-प्रतियोगिता में 'बेस्ट राइटर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में रामामन जायसवाल नए आयामों के साथ एक लेखक के रूप में रंगमंच को अपनी वफादारी अर्पित कर रहे हैं।

अनुक्रमणिका

~ पात्र ~..1

~ दृश्य — १ ~..2

~ दृश्यं — २ ~..14

~ दृश्य — ३ ~..22

~ दृश्य — ४ ~..30

~ दृश्य — ५ ~..33

~ दृश्य — ६ ~..41

~ दृश्य — ७ ~..46

~ दृश्य — ८ ~..56

~ दृश्य — ९ ~..60

~ दृश्य — १० ~..71

~ दृश्य — ११ ~..82

~ दृश्य — १२ ~..93

~ **पात्र** ~

बुजु

गुल्ला

मद्रासन

चिनामा

~ दृश्य — १ ~

(मंच धीरे-धीरे प्रकाशित होता है। मंच को बीच से एक पतली दीवार की मदद से दो घरों में बाँटा गया है। दाएँ वाला सुसज्जित घर एक ३० वर्ष की मद्रासी महिला 'कमला देवी' का है—जबकि बाएँ वाला साधारण घर एक ३३ वर्ष के बिहारी 'बुजु' ने किराए पर लिया है। बीच की दीवार के कोने में एक छोटी सी खुली खिड़की है, जहाँ से अक्सर वह, 'मद्रासन', बुजु के घर में ताक-झाँक करती रहती हैं—और जिसके कारण कई बार दोनों के बीच शब्दाडंबर युद्ध भी हो चुका है। बुजु का एक २१ वर्ष का बंगाली नौकर है, गुल्ला, जो एक पेशेवर चोर के अलावा अव्वल दर्जे का आगजनी है। उसे झाड़ू-पोछा लगाते समय चप्पल पहनने और पुराने गाने सुनने की आदत है। वह स्पीकर में 'तारा रम पम पम...' गाना लगाकर नाचते हुए बुजु के घर पर झाड़ू लगा रहा है। तभी मद्रासन फोन पर चिल्लाती हुई मंच पर प्रवेश करती है। गुल्ला मद्रासन की आवाज सुनकर झाड़ू को मंच पर रखता है, जल्दी से स्पीकर को बंद करता है, और फिर हॉल में रखे इकलौते टेबल पर चढ़कर खिड़की से मद्रासन को झाँकता है।)

मद्रासन: **(गरजते हुए)** अय्यो...! कोर्ट ने तुमको मेरेको हर महीने बारह हजार रुपये देने को कहा था जी? ...तो फिर तुमने मेरेको नौ हजार क्यों भेजा? बाकी तीन हजार का क्या...तुमने अपने अब्बा का कफन सिलवाया जी? ...अय्यो, तुम्हारे पास पैसों की तंगी हो गई जी...तो इसमें मई क्या करे? यह तुम्हारा प्रॉब्लम, तुम समझो! ...वह सब मई नहीं जानती, बस! मेरेको मेरा बाकी का पैसा अभी भेजो! वरना...मई तुमको फिर से कोर्ट में घसीटेगी। हेलो, हेलो...! इसकी इतनी हिम्मत! मेरा फोन कट किया जी...

(मद्रासन अपशब्द बड़बड़ाते हुए दुबारा कॉल लगाती हुई वापस विंग्स के अंदर चली जाती है। गुल्ला खिड़की में अपना सिर घुसाकर मद्रासन की बात सुनने की कोशिश करता है—तभी बुजु, बनियान और गमछे में अगरबत्ती दिखाते हुए मंच पर प्रवेश करता है।)

बुजु: **(धीमी स्वर में)** ॐ धूपं आघ्रापयामि नमः...

(उसकी नजर गुल्ला पर जाती है, जो अपने गंदे चप्पल पहने टेबल के ऊपर चढ़ा हुआ है। वह धीरे से अगरबत्ती को पीछे दीवार में ठोंसता है और झाड़ू उठाकर गुल्ला को पीटने लगता है।)

साला! कमीना! नमकहराम! नीचे उतर...जल्दी नीचे उतर...!

(वह गुल्ला का हाथ खींचकर उसे टेबल से नीचे लाता है।)

तुमसे कितनी बार कहा हूँ, कि मेरे घर के अंदर अपनी यह गंदी चप्पल पहनकर मत आना! हर दिन जब मैं भगवान की पूजा करके कमरे से निकलता हूँ...तो या तो तू झाड़ू लगा रहा होता है...या इधर-उधर बस टकटकी लगाए रहता है, हाँ? तुम अपनी हरकतों से कब बाज आओगे...?

(मद्रासन, बुजु की आवाज सुनकर, अपने जूड़े को गजरे की माला से सजाते हुए मंच पर प्रवेश करती है और सोफे पर चढ़कर खिड़की से बुजु के घर में झाँकती है।)

गुल्ला: **(चीं-चीं करते हुए)** आ**...**ऊ**...**अरे दादा...हम तो बस उस बगल वाली मादाम की बात सुन रहे थे। वह आपको गंदी-गंदी गालियाँ दे रही थी।

बुजु: **(झाड़ू को हवा में रोकता है। चौंकते हुए)** क्या...! क्या कह रही थी मद्रासन?

गुल्ला: मादाम किसी को फोन पे कह रही थी दादा...कि आप चमगादड़ की उल्टी हैं...सुअर की झूठी थाली हैं...कमीना हैं, कुत्ता हैं, मा...''

बुजु: क्या कहा...!

(वह फिर से गुल्ला को मारने लगता है।)

गुल्ला: आ...ऊ...अरे दादा! हमने क्या किया? यह सब तो मादाम कह रही थी, उईमा! बस करो दादा, लागछे!

(उसकी नजर खिड़की पर जाती है।)

वह देखिए दादा! मादाम आपके घर में फिर से झाँक रही है।

(बुजु अपना सिर खिड़की की तरफ घुमाता है और मद्रासन को छिपते हुए देख लेता है। मद्रासन तुरंत सोफे से उतरकर विंग्स की तरफ तेज़ी से बढ़ने लगती है। बुजु दहाड़ते हुए खिड़की के पास आता है।)

बुजुः अरे, ओ मद्रासन...! मेरे घर में क्या तेरे बाप का खजाना गाड़ा हुआ है? क्यों तुम बार-बार मेरे घर में ताका-झाँकी करती रहती हो, हाँ?

मद्रासन: **(रुकती है, तीव्र स्वर में)** अय्यो बिहारी...! बाप पे नहीं जाना...अपनी हद में रहो!

बुजु: तो तुम भी एक पड़ोसी की तरह रहो और मुझे यहाँ चैन से रहने दो! अरे मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो तुम मुझे गाली दे रही थी?

मद्रासन: अय्यो...यह गुल्ला झूठ बोलता जी! मयने तुमको कोई गाली नहीं दिया जी।

बुजु: अच्छा...'कोई गाली नहीं दिया जी!', और जो लोमड़ी की तरह तुम मेरे घर में झाँक रही थी...वह क्या था, हाँ?!

मद्रासन: अय्यो...बिहारी! मेरे से जबान संभाल के बात करना! वरना मई तुम्हारा मुँह नोच लेगी!

(दोनों लड़ते हुए बीच की दीवार के करीब आते हैं। गुल्ला पीछे मंच पर बैठकर दोनों के झगड़े का मज़ा लेता है।)

बुजु: अरे हाथ तो लगाकर दिखा...! ऐसा तमाचा मारेंगे कि तुमको हर जगह तुम्हारी नानी दिखती फिरेगी!

मद्रासन: **(हैरान होकर)** अय्यो...क्या बोला जी? तुम मेरेको थप्पड़ मारोगे जी?

बुजु: अगर तुम बिना बजह मुझे गाली दोगी...तो हाँ!

मद्रासन: अय्यो...मयने तुमको गाली नहीं दिया जी! पर अब देगी—साला, छिपकली की दुम! आइंदा मेरे से बदतमीजी की न...तो मई तेरे मुँह पर मुक्का मारकर तेरा नाक तोड़ देगी। साला बिहारी...हट!

(मद्रासन विंग्स के अंदर चली जाती है। गुल्ला जोर-जोर से हँसने लगता है।)

बुजु: (बुरा मानकर) साली, 'बिहारी तो ऐसे बोल गई जैसे यह शब्द कोई गाली हो।'

गुल्ला: **(गिलगिलाते हुए)** अब दादा, नाले में मुँह धोओगे, तो मुँह काला होगा ही।

बुजु: **(चिढ़कर)** साला...! कमीना...! मेरा नौकर होकर मेरे पर ही हँस रहा है, नमकहराम! पहले झूठ बोलकर मेरे और मद्रासन के बीच लड़ाई करवाता है...और फिर खुद मजे लेता है! पिछली बार तेरे इसी झूठ के कारण मैं इस सोसाइटी से निकलते-निकलते रह गया था...और आज तूने फिर वही हरकत की...आज तुझे नहीं छोड़ूँगा!

(वह झाड़ू को हवा में उठाता है, जिसे देखकर गुल्ला फुर्ती से घर से बाहर निकल जाता है।)

वापस आया तो तेरी चमड़ी उधेड़ दूँगा...! निकम्मा! मेरा पूरा पूजा बर्बाद कर दिया...

(वह गुस्से में बड़बड़ाते हुए वापस अगरबत्ती को पकड़ता है और विंग्स के अंदर चला जाता है। मंच के बाएँ हिस्से पर रोशनी धीमी हो जाती है। थोड़ी देर बाद, गुल्ला सीटी मारते हुए मद्रासन के घर में प्रवेश करता है।

घर को सुनसान पाकर, वह एक-एक कर सभी दराज खोलकर उन्हें जाँचने लगता है। मद्रासन का प्रवेश—वह गुल्ला को चोरी करते हुए देखती है, धीमे कदमों से गुल्ला की तरफ बढ़ती है, और पीछे से उसके कान को दबोच लेती है।)

मद्रासन: अय्यो, तुम क्या करता जी?

गुल्ला: **(दर्द में कराहते हुए)** आ...ओ...वो मादाम, वो...हम बस दराज के नीचे जमी गंदगी को साफ कर रहे थे।

मद्रासन: अय्यो...गंदगी की सफाई कर रहे थे? या हाथ की सफाई कर रहे थे? खाओ अपनी अम्मा की कसम, कि तुम चोरी नहीं कर रहे थे।

गुल्ला: हाँ मादाम...हमारी सभी माँओं की कसम...हम सच में सिर्फ सफाई कर रहे थे।

(मद्रासन गुस्से में गुल्ला के कान को जोर से मरोड़ती है। गुल्ला अपनी चीख दबाता है।)

मद्रासन: मयने खुद अपनी आँखों से तुमको चोर की तरह दराज को जाँचते हुए देखा! और उसके बावजूद तुम अपनी अम्मा की झूठी कसम खा रहे हो? और 'सभी माँओं' का क्या मतलब? तुम्हारी कितनी अम्मा जी?

गुल्ला: पाँच, मादाम।

मद्रासन: अय्यो...यह कैसे हुआ जी?

गुल्ला: दरअसल, मादाम, जब से दुनिया में यह 'एक्स्ट्रा मैरिटल अफेर' और तलाक का ट्रेंड आया है, तब से 'माता-पिता' शब्द बस एक मजाक बनकर रह गया है। एक जमाना था, मादाम! जब एक माता-पिता के नौ-नौ बच्चे होते थे...लेकिन अब, अब तो एक बच्चे के नौ-नौ माता-पिता होते हैं! हम उन्हीं बच्चों में से एक हैं मादाम। हमने बचपन से ही कभी अपनी माँ को किसी और के साथ भागते देखा है...तो कभी हमारा बाप गायब हो जाता था। यही देख-देखकर हम बड़े हुए हैं, मादाम! और फिर एक दिन हमने गणित किया...तो माँ का आँकड़ा पाँच निकला और बाप का चार।

मद्रासन: **(गुल्ला को रोकते हुए)** बस-बस! मेरेको तुम्हारी नाजायज कहानी सुनने में कोई इंटरेस्ट नहीं जी...

(वह गुल्ला के कान को मोड़ती है। गुल्ला चीखता है।)

तुम्हारी इतनी हिम्मत...कि तुम मेरे ऊपर नजर रखता जी, हाँ? और क्या कहा तुमने बिहारी से? कि मयने उसे गाली दिया?

गुल्ला: **(दर्द भरे स्वर में)** आ...उ...मादाम! सॉरी! मुँह से निकल गया था।

मद्रासन: **(धमकी भरे लहजे में)** अय्यो...'मुँह से निकल गया था जी...?' तो अब तुम देखो कि मई कैसे तुमको इस सोसाइटी से निकालती। मई अभी सेक्रेटरी के पास जाती और उसे बताती; कि कैसे...दस महीने पहले तुमने मेरे से दस हजार रुपये लिए थे, यह बोलकर कि तुम्हारी अम्मा को दस्त हो गया जी। और फिर मेरे दस हजार बार मांगने पर भी तुमने अभी तक मेरे कर्जे का दस रुपए भी नहीं चुकाया जी। उसके बाद मई अपना सारा पैसा उस बिहारी से वसूलेगी, और फिर...पूरे सोसाइटी के सामने तुम दोनों को बेइज्जत करके यहाँ से निकालेगी।

गुल्ला: अरे मादाम, आप क्यों बार-बार यह सब बोलकर हमको धमकाती रहती हैं? हमारी बात हुई थी न? कि दस हजार के बदले हम आपके घर का सारा काम कर देंगे। और वैसे भी, दस महीने से हम एक गधे की तरह आपकी सेवा तो कर

ही रहे हैं...आपके पैर से लेकर आपका बाथरूम—सब साफ कर रहे हैं! अब क्या खून चूसेंगी, मादाम? **(रोते हुए)** पहली बार कोई उधार हमें इतना महंगा पड़ा है!

मद्रासन: **(फटकारते हुए)** चुप...! तुम मेरे साथ गेम खेलोगे तो मई तुमको क्या छोड़ देगी? मई...क्या तुमको कोई ममता की मूरत दिखाती जी? अब सीधे तरीके से मेरा पैसा निकालो, नहीं तो**...**

गुल्ला: **(अपने हाथों को जोड़ते हुए)** अरे मादाम! अब जाने भी दीजिए...क्यों गरीब के पेट में लात मार रही हैं...हम माफी माँगते हैं।

(वह सिसकने लगता है।)

मद्रासन: ठीक है—ठीक है!

(वह गुल्ला के कान को छोड़ती है। गँभीरता से।)

पर...मई तुमको आखिरी वार्निंग देती! अगर दुबारा तुमने मेरे साथ कोई गेम खेला...तो मई...

गुल्ला: **(अपने कान सहलाते हुए। जल्दी से)** तो आप मेरा पत्ता इस सोसाइटी से साफ कर देंगी। यही न मादाम? हम समझ गए हैं।

मद्रासन: ठीक है—ठीक है! अब जाओ और झाड़ू-पोछा लगाओ।

(गुल्ला अपना सिर हिलाते हुए विंग्स की ओर जाने लगता है। तभी मद्रासन की नजर गुल्ले की पैंट की जेब पर जाती है, जो अधिक फुली हुई है। वह पुकारती है)

अय्यो, सुनो! वापस आओ।

(गुल्ला वापस मद्रासन के पास आता है।)

यह तुम्हारे जेब में क्या जी?

गुल्ला: **(घबराते हुए)** वो...वो...बाम की डिब्बी है मादाम! दादा हमको मारने के बाद हमेशा बाम देते हैं; लगाने के लिए। हमारे बीच गुस्सा अपनी जगह और प्यार अपनी जगह—एकदम म्यूच्यूअल फंड...

मद्रासन: **(डपटते हुए)** अपनी बकवास बंद करो...! और जो भी चीज तुम्हारी जेब में, उसे बाहर निकालो!

गुल्ला: अरे मादाम, आप कहाँ जा रही हैं...

(वह मद्रासन की बड़ी-बड़ी आँखों को देखकर सहम जाता है, और फिर धीरे-धीरे अपने पैंट की जेब में अपना हाथ डालकर एक हीरे की तरह चमकता पत्थर बाहर निकालता है। मद्रासन लालच भरी नजरों से उस पत्थर को देखती है, और तुरंत गुल्ला के हाथ से पत्थर को झपट लेती है।)

अरे मादाम! यह आपका नहीं है...यह हमने कहीं और से चुराया है—हमारा मतलब हमको मिला है।

मद्रासन: **(नाटकीयताः)** अय्यो...! मेरी अम्मा की आखिरी निशानी! मई कितने दिनों से ढूँढ रही थी जी...! और तुमने इसे चुराया?

गुल्ला: अरे मादाम! आप क्यों नाटक कर रही हैं? यह पत्थर हमने कहीं और से चुराया है—हमारा मतलब हमको मिला है। आप तो हमसे भी बड़ी चोर निकलीं।

मद्रासन: **(गुस्से से)** चुप हो जाओ...! अगर एक और शब्द तुमने अपने मुँह से निकाला तो मई पुलिस बुलाएगी...उसके बाद तुम पुलिस को बताना...कि यह पत्थर तुमने चोरी की...या तुमको मिला, ठीक है?

(गुल्ला गुस्से में अपना सिर 'नहीं' में हिलाता है।)

तो फिर यह पत्थर किसका जी?

गुल्ला: **(कोसते हुए)** तेरी माँ की!

मद्रासन: हाँ...शाबाश! अब तुम जाओ और झाड़ू-पोछा लगाओ।

(गुल्ला गुस्से में बड़बड़ाते हुए विंग्स के अंदर चला जाता है। मद्रासन खुश होकर पत्थर को चारों ओर से निहारती हुई।)

मद्रासन: अय्यो...! यह पत्थर तो लाखों का लगता जी! आज सुबह उठने के बाद मयने सबसे पहले क्या देखा था जी? ओह! मई तो भूल गई...कि मयने सबसे पहले खुद का चेहरा देखा था जी! **(हँसती है)** ...मई आज ही 'कंसाली' के पास जाकर इसको बेच देगी, और फिर उन पैसों से मई अपनी इच्छाएँ पूरी करेगी जी। पर...सबसे पहले तो मई एक बड़ा टीवी लेगी। हेय! मेरेको कब से एक बड़ा टीवी की इच्छा जी।

गुल्ला: **(विंग्स के अंदर से चिल्लाता है।)** मादाम...!!

(वह भागते हुए मंच पर आता है, उसके हाथों में एक टीवी का बॉक्स है। मद्रासन पत्थर को अपने पीछे छुपा लेती है।)

मादाम! हम आपके कमरे में झाड़ू लगा रहे थे! कि तभी अचानक यह टीवी अपने आप आपके बिस्तर के ऊपर प्रकट हो गया!

मद्रासन: क्या बकवास कर रहे हो?

(वह गुल्ला को टीवी का बॉक्स मंच पर रखने का इशारा करती है, और बॉक्स खोलने पर अंदर टीवी पाती है। बात बनाते हुए।)

...अय्यो, मई भी कितनी बड़ी 'मरक्कक्कूडिया' बनती जा रही जी!

गुल्ला: क्या?

मद्रासन: अय्यो...मेरा मतलब कि, मई कितनी बड़ी भुलक्कड़ बनती जा रही—यह टीवी मेरा! मयने इसको बीएड पर रखा था।

गुल्ला: अरे नहीं, मादाम! हमने खुद अपनी आँखों से देखा है! अचानक हवा में छोटा-छोटा चाँद-सितारा फूटा...और यह टीवी अपने आप आपके बिस्तर पर प्रकट हो गया!

मद्रासन: **(अपनी नाक को गुल्ला के पास ले जाकर सिकुड़ती हुई)** तुम सुबह-सुबह नशा करके आया जी? जो तुमको दिन में चाँद-तारे फूटते दिख रहे?

गुल्ला: नहीं—नहीं, मादाम! हम नशा नहीं किए हैं! हम सच कह रहे हैं! यह टीवी हवा में खुद प्रकट हुआ था, माँ कसम!

मद्रासन: **(डपटते हुए)** चुप...! जाओ जाकर झाड़ू मारो! वरना...मई सेक्रेटरी से जाकर कह देगी, कि तुम शराब पीकर सोसाइटी में घूमता जी।

गुल्ला: नहीं मादाम...माफ़ कर दीजिए...हम जाते हैं...

(वह पागल की तरह बड़बड़ाते हुए वापस विंग्स के अंदर चला जाता है।)

मद्रासन: **(अविश्वसनीय ढंग से टीवी को जाँचते हुए)** अय्यो...यह कैसे हुआ जी? यह इतना बड़ा टीवी मेरे रूम में कैसे आया जी? वह भी जितना बड़ा मयने सोचा था...सेम-टू-सेम उतना ही बड़ा।

(वह पत्थर को सामने लाती है।)

कहीं इस पत्थर ने तो कोई जादू नहीं किया...? कहीं ये कोई चमत्कारी पत्थर तो नहीं...? मई एक बार चेक करती।

(वह पत्थर को अपनी दाहिनी मुट्ठी में कसती है।)

मेरेको एक टीवी चाहिए।

(वह विंग्स की तरफ देखती है। कोई हलचल न पाकर वह सोचने लगती है। थोड़ी देर बाद, मुस्कुराते हुए।)

'मेरी इच्छा—एक बड़ा टीवी।'

गुल्ला: **(विंग्स के अंदर से)** मादाम...!!

(गुल्ला की चीख सुनकर, मद्रासन जल्दी से टीवी को उठाकर सोफे के पीछे छिपा देती है और सोफे पर बैठ जाती है। गुल्ला दौड़ते हुए मंच पर प्रवेश करता है, उसके हाथों में एक और टीवी का बॉक्स है।)

मादाम! काली माई दिब्बी, मादाम! आपके घर में एक और टीवी हवा में प्रकट हुआ!

(मद्रासन सोफे से उछलकर गुल्ला के कान को फिर से दबोचती है। गुल्ला दर्द में सिसकने लगता है।)

मद्रासन: अय्यो, तुम खुद को जोकर और मेरेको गधा समझता जी?! अभी जो टीवी तुम अंदर लेके गया...वही टीवी तुम मेरेको वापस लाकर दिखाता जी।

गुल्ला: **(परेशान होकर)** अरे नहीं, मादाम! वह टीवी तो हम यहीं छोड़कर गए थे।

मद्रासन: अच्छा जी...'यहीं छोड़कर गए थे?', तो फिर पहले वाला टीवी कहां है दिखाओ?

(गुल्ला अपना सिर चारों ओर घूमाता है।) .

क्यों जी? मिला तुमको टीवी? तुम सुधरोगे नहीं! मई अभी जाती सेक्रेटरी के पास।

(गुल्ला झट से टीवी का बॉक्स मंच पर रखता है और अपने घुटनों पर गिरकर मद्रासन का पैर पकड़ लेता है, गिड़गिड़ाते हुए।)

गुल्ला: हमको माफ कर दीजिए मादाम...

(वह खुद को मारने लगता है।)

हम उल्लू का पट्ठा हैं! बेवकूफ हैं! गधे हैं! पता नहीं हमको क्या हो गया है मादाम? लगता है पिछवाड़े का मार हमारे सिर पर चढ़ गया है! हमको कुछ ठीक नहीं लग रहा मादाम? शायद हमको बुखार भी चढ़ रहा है?

मद्रासन: हाँ, ठीक है—ठीक है! एक काम करो आज तुम छुट्टी ले लो और निकलो मेरे घर से! मई अपना काम खुद कर लेगी।

गुल्ला: धन्यवाद मादाम! धन्यवाद।

(वह मद्रासन के घर से निकल जाता है। मद्रासन दरवाजा बंद करती है—पत्थर के साथ खेलते हुए।)

मद्रासन: अय्यो...! जादुई पत्थर! जादुई पत्थर! कहीं मई कोई सपना तो नहीं देख रही जी? मई एक बार चेक करती।

(वह खुद को चुटकी काटती है और फिर पागलों की तरह हँसने लग जाती है।)

अय्यो...मई पागल हो जाएगी! मई पागल हो जाएगी! जादुई पत्थर! जादुई पत्थर! अय्यो देवी अम्मा...! मेरेको इतनी बड़ी खुशी बर्दाश्त करने की शक्ति दो, अम्मा! **(भावुक होकर)** यह जरूर मेरे पिछले जन्म के अच्छे कर्मों का तोहफा जी! अय्यो...अय्यो...! अब मई जो चाहे वह हासिल कर सकती जी...अब मई अपनी सारी इच्छाएँ पूरी करेगी जी!

(वह अपनी बाँहें फैलाकर जोर-जोर से हँसने लगती है। इसी के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्यं — २ ~

(मंच हल्की रोशनी में प्रकाशित होता है। आधी रात का समय। गुल्ला, बुजु के घर में चटाई बिछाकर सो रहा है और नींद में बड़बड़ा रहा है, जैसे उसके सपने में कोई सुंदर लड़की उसके सिर से छाती तक अपनी नरम उँगली फेर रही हो।)

गुल्ला: उफ...मत करो डार्लिंग...गुदगुदी हो रही है...

(वह नींद में मंच से उठकर खड़ा होता है और खिलखिलाते हुए बुजु के कमरे में घुस जाता है। विंग्स के अंदर से बुजु के चिल्लाने की आवाज आती है—वह गुस्से में गुल्ला को पानी के गिलास से मारता हुआ मंच पर प्रवेश करता है।)

बुजु: साला...! हरामखोर...! पानी में डुबकी मार रहा था क्या? साला! मेरे ऊपर ऐसे छलाँग मारा...जैसे मैं कोई स्विमिंग पूल हूँ!

गुल्ला: **(चीं-चीं करते हुए)** आ...उ...माफ कर दो दादा!

(वह एक हाथ से बुजु का हाथ पकड़ता है, और दूसरे हाथ से अपने गीले चेहरे को पोछता है। रोते हुए।)

दादा...हम तो बस एक सुंदर लड़की का सपना देख रहे थे। वह लड़की हमारा हाथ पकड़कर हमको आपके कमरे में ले गई...और फिर बिस्तर पर लेटकर हमसे कहीं कि, 'तुम अगर असली मर्द के बच्चे हो तो मेरे ऊपर जोर से छलाँग मार के दिखाओ—' तो हमने छलाँग मार दी।

बुजु: अच्छा...! तो कल को अगर वह लड़की तुमसे कहे कि, 'अगर तुम असली मर्द के बच्चे हो तो मुझे छुरी मार के दिखाओ—'तो तुम तो साला मुझे ही मार डालोगे बे!

गुल्ला: हाँ दादा...यह तो सोचने वाली बात है। दादा...आप एक काम कीजिए, आप बाहर चटाई पर सो जाइए, और हम अंदर बिस्तर पर सो जाते हैं।

बुजु: क्यों बे?

गुल्ला: **(सलाह देते हुए)** दरअसल दादा, सपने में उस लड़की ने हमसे कहा था कि...जमीन पर सोने से उसका बदन अकड़ जाता है। इसलिए आप ही सोचिए दादा...कि अगर वह लड़की वापस हमारे सपने में आई...तो वह फिर हमको आपके बिस्तर पर ले जाएगी। और ऐसे में दादा...अगर हम अंदर बिस्तर पर सोएँ...तो हम दोनों अंदर बिस्तर पर ही रह जाएँगे…और आप बाहर चटाई पर, पूरी सुरक्षा में बउदी का सपना देखिएगा।

(बुजु भड़कते हुए अपना हाथ छोड़ाता है, और गुल्ला को वापस गिलास से मारने लगता है।)

बुजु: साला...! कमीना...! तुमने मेरे घर को कोठा और मुझे दल्ला समझ रखा है क्या, हाँ? साला! हुकुम तो ऐसे चला रहा है जैसे मैं तेरा नौकर हूँ! नहीं...तुम साला मेरा जान का दुश्मन हो... इसलिए तुम अब मेरे घर में नहीं सोओगे! तुम जाओ और नीचे पार्क में जाकर सो जाओ...सुबह जब मुर्गा बांग देगा, उसके बाद यहाँ मेरे घर पर कदम रखना।

(वह गुल्ला को धक्का मारते हुए घर से बाहर निकालने लगता है।)

चल...निकल यहाँ से...चल...दफा हो...!

गुल्ला: दादा...प्लीज...सॉरी दादा...!

(मद्रासन के घर की बत्ती जलती है। वह जमाई लेती हुई मंच पर प्रवेश करती है, और
सोफे पर चढ़कर खिड़की से बुजु के घर में झाँकती है।)

मद्रासन: **(खीजनाकर)** अय्यो! तुम दोनों क्या अंधे हो गए हो जी? तुम दोनों को दिखाई नहीं देता? कि रात के ढाई बज रहे...सब सो रहे! और तुम दोनों यहाँ शराब पीकर झगड़ा करता जी!

बुजु: **(गरजते हुए)** अबे, चुप...! ज्यादा चपर-चपर मत कर मद्रासन! मैंने कोई शराब नहीं पी है। और मैं इसलिए चिल्ला रहा हूँ, क्योंकि यह साला हरामखोर नींद में मुझे अपनी मेहबूबा समझकर मुझ पर कूद पड़ा...नहीं रोकता तो पता नहीं साला मेरे साथ क्या-क्या कर बैठता। **(खिड़की के पास आते हुए)** अब तुम ही बताओ मद्रासन? अगर सोते समय मैं तुम्हारे ऊपर कूद जाऊँ...तो क्या तुम मुझे मारोगी या उठकर कुंडी लगा दोगी, बोलो?

मद्रासन: अय्यो...तुम्हारा बात करने का ढंग कितना गंदा जी। क्या तुमको एक महिला से बात करने की तमीज नहीं जी?

बुजुः क्या?

मद्रासन: अय्यो...यही कारण था कि मई एक बिहारी को अपने बगल वाले घर को रेंट पर देने के खिलाफ थी—सब जाहिल, अनपढ़ और एक नंबर के नशेड़ी होते जी। हर जगह बस शराब पीकर गुंडागर्दी करते।

बुजु: **(वापस भड़कते हुए)** देखो मद्रासन! अभी मेरा माथा बहुत गरम है! इसलिए कह रहा हूँ कि मेरे साथ उल्टी-सीधी बात मत करो! और न ही अब मेरे मामले में पड़ो। जाओ! जाकर चादर तानकर सो जाओ।

मद्रासन: **(खिसियाकर)** अय्यो, तुम इस सोसाइटी के सेक्रेटरी नहीं हो जी! जो तुम मेरे से ऐसे अकड़कर बात कर रहे हो, समझे? और तुम्हारा मामला है तो तुम इसे अपने घर ही रखो! यूँ छिल्ला-छिल्लाकर तुम मेरेको क्यों परेशान करता जी? इतनी सी बात तुमको समझ में नहीं आती? अरे, मई तो भूल गई! कि तुम्हारा दिमाग तो शराब पी-पी कर मोटा हो गया जी...इसीलिए तुमको इतनी छोटी सी

बात कहाँ से समझ आएगी—पूरी सोसाइटी को तो तुमने अपने बाप का घर समझ रखा जी...

बुजु: **(धमकाते हुए)** अबे, चुप...! बहुत हो गया तुम्हारा मद्रासन! अगर अब तुमने मेरी जाति या मेरे परिवार के खिलाफ एक और शब्द भी कहा! तो मुझसे बुरा और कोई नहीं होगा, बता रहा हूँ!

मद्रासन: अय्यो, यह गीदड़ धमकी जाके अपने बाप को दो।

बुजु: अबे चुप, साली! खुद की शक्ल कभी आईने में देखी है? कि खुद कितनी बददिमाग लगती है। साली मोटासन! कभी भूले-भटके तुम्हें तुम्हारा असली चेहरा आईने में दिख गया ना...तो उसी बखत तुम नारियल की चटनी में डूब मरोगी।

(गुल्ला, मद्रासन की बेइज्जती पर जोर-जोर से हँसने लगता है। बुजु को भी हँसी आ जाती है।
मद्रासन का चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है।)

मद्रासन: **(अपनी आँखें बड़ी करते हुए। तीव्रता से)** अय्यो...एक तो तुमने खुद गलती की...और ऊपर से तुम मेरी बेइज्जती करके अपने नौकर के साथ हँसता जी।

बुजु: **(धौंस देते हुए)** अरे बेज्जती क्या! अगर दुबारा कभी मेरे जाति या बाप पर गई...तो मैं तुम्हारी चमड़ी उधेड़कर रख दूंगा, समझी?!

मद्रासन: **(हैरानी से)** अय्यो, क्या कहा जी? तुम मेरी चमड़ी उधेड़ोगे? मेरेको मारोगे?

बुजु: हाँ!

मद्रासन: अय्यो...मई कल सुबह ही सेक्रेटरी के पास जाकर तुम्हारे खिलाफ शिकायत करती—कि पहले तो तुम और तुम्हारा नौकर आधी रात में दारू पीकर

हंगामा करता। और फिर...मयने जब तुम दोनों को रोकने की कोशिश की...तो तुमने मेरा बॉडी-शेमिंग किया, और मेरेको मारने की धमकी दी। उसके बाद...मई तुम दोनों को इस सोसाइटी से लात मारकर बाहर निकलवाएगी। फिर वापस चले जाना अपने गाँव...और वहाँ अपने इस दो कौड़ी के नौकर के साथ भैंसों का गोबर साफ करना।

बुजु: हाँ! और फिर वही गोबर लाकर मैं तुम्हारे मुँह में घुसेड़ दूँगा—गोबरासन!

(गुल्ला ठहाके मारने लगता है। मद्रासन गुस्से में तेज़ श्वास लेने लगती है।)

मद्रासन: अय्यो बिहारी...! मई तुमको लास्ट वार्निंग देती...अपनी जबान को लगाम दो!

बुजु: चल हट! खुद का दिमाग तो गोबर जैसा है, जो इतनी छोटी सी बात तुम्हारे पल्ले नहीं पड़ रही कि दूसरे की जात पर नहीं जाना चाहिए...और आई बड़ी मेरे दिमाग को कोसने वाली!

(मद्रासन अपनी श्वास की गति और तेज़ करती है। बुजु उपहास के साथ।)

अल्ले-अल्ले...! क्या हुआ जी? मद्रासु को गुस्सा आ रहा है जी? और सुनना है जी? अल्ले-अल्ले...मेरी संडासन, बदबूदारासन, बेवकूफासन!

(बुजु और गुल्ला जोर-जोर से हँसते हुए मद्रासन को चिढ़ाने लगते हैं।)

मद्रासन: **(खार खाते हुए)** यह तुमने ठीक नहीं किया बिहारी...इसका अंजाम तुमको बहुत भारी पड़ेगा। तुमको अपने नौकर पर बहुत नाज न जी? तो अब तुम देखो कि मई कैसे तुम दोनों को अलग करती। तुम यही रुको।

(वह सोफे से उतरकर विंग्स के अंदर चली जाती है। गुल्ला बुजु की नजरों से बचते हुए वापस चटाई पर जाकर सो जाता है।)

बुजु: हाँ, जा-जा, सेक्रेटरी साहब के पास! और तू कर भी क्या सकती है! आई बड़ी मुझे धमकी देने वाली।

(उसकी नजर गुल्ला पर पड़ती है, वह गुल्ला को पकड़कर मंच से उठता है और धक्का मारते हुए
उसे घर से बाहर निकालने लगता है।)

और तू वहाँ कहाँ चल दिया बे! चल बाहर निकल...चल...सवेरे आना...चल निकल!

गुल्ला: **(गिड़गिड़ाते हुए)** दादा...माफ कर दो...प्लीज, दादा...

(वह जैसे ही दरवाजे के पास आता है, तभी वह जोर से अपनी सांस को अंदर खींचते हुए
अपने पूरे शरीर को अकड़ लेता है। डरते हुए।)

दादा, कुछ घुस रहा है।

बुजु: क्या घुस रहा है बे?

गुल्ला: पता नहीं दादा, पर कुछ तो घुस रहा है।

बुजु: **(गुल्ला का चक्कर लगाते हुए)** कहाँ से घुस रहा है?

गुल्ला: पता नहीं दादा, पर कुछ तो घुस रहा है।

बुजु: **(खिजलाकर)** अबे, क्या घुस रहा है? कैसे घुस रहा है? कहाँ से घुस रहा है? यह बताएगा भी! कि बस घुस रहा है ही बोले जाएगा? साला, आधी रात गई नौटंकी करता है मेरे साथ!

(अचानक गुल्ला चुड़ैल की तरह हँसते हुए बुजु को जोर से धक्का मारकर उसे मंच पर गिरा देता है, और फिर दीवार की तरफ घूमकर अजीब ढंग से बैठ जाता है। मद्रासन अपनी दाहिनी हथेली में पत्थर

पकड़े हुए तेज़ी से मंच पर वापस आती है, और सोफे पर चढ़कर बुजु के घर में झाँकती है। बुजु डरते हुए उठता है और धीमे कदमों से गुल्ला के पास जाता है।)

बुजु: अबे गुल्ला! अरे ओ गुल्ला! देख, मुझे सवेरे काम पर जाना है...इसलिए अपनी नौटंकी बंद कर दो, प्लीज! बहुत हो गई मस्ती।

(वह जैसे ही गुल्ला का कंधा पकड़ता है, गुल्ला फिर से हँसता है। बुजु डरते हुए टेबल के नीचे जाकर छिप जाता है, रोते हुए।)

अबे गुल्ला...! यह तुझे क्या हो गया है? हे भगवान! अब मैं क्या करूँ?

मद्रासन: अय्यो...! अब आया न ऊंट पहाड़ के नीचे! अब हिम्मत है तो मेरे खिलाफ कुछ बोलकर दिखाओ बिहारी! उसके बाद...अगर तुमको तुम्हारी अम्मा याद नहीं आई, तो मेरा नाम भी कमला देवी नहीं जी।

(बुजु बाहर निकलकर टेबल के ऊपर चढ़ता है और मद्रासन के करीब आता है।)

बुजु: अच्छा...तो यह तेरी करतूत है मद्रासन? अरे क्या कला जादू कर दिया तुमने मेरे बिचारे गुल्ला पर? अरे...मुझे तो पहले से ही शक था कि तुम साली डायन हो।

(गुल्ला उछलते हुए टेबल के पास आता है और बुजु को देखकर जोर-जोर से हँसने लगता है। बुजु, गुल्ला की लाल आँखें और खलनायक हँसी सुनकर डर से खुद को सिकोड़ लेता है।)

गुल्ला: **(लड़की की आवाज में, बंगाली में)** ऐ टा की रे...? बुझते पेचिस ना...? दीदी की बोलाम? नुगरा कौथा कोर्बिस ना...!

बुजु: **(रोते हुए)** गुल्ला...मेरे बच्चे! यह तुझे क्या हो गया है? यह कैसी बेहकी-बेहकी बातें कर रहा है?

गुल्ला: **(गुस्से में अपने दांतों को पिस्ते हुए)** एमी तोमार गुल्ला नौई, हरामी! अमी तोड़ माँ...तोड़ दीदी-.माँ...तोड़ महाना दादी माँ...आमी शक्चुन्नी! आज के अमी तुमार सोब पूर्वपुरुष दर्शन कोराबो...!

(वह बुजु को पकड़ता है। बुजु, गुल्ला को लात मारकर घर से बाहर निकल जाता है। गुल्ला गिलास उठाकर बुजु के पीछे भागता है। मद्रासन खिड़की से यह सब देखकर हँसती है। इसी के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्य — ३ ~

(सुबह का समय। बुजु का घर अँधेरे में है। मद्रासन का घर प्रकाशित होता है, वह आराम से सोफे पर बैठकर चाय पी रही है और मोबाइल पर गेम खेल रही है। बुजु के घर पर दस्तक होती है।)

बुजु: **(विंग्स के अंदर से चिल्लाता है।)** कौन है...?!

चिनामा: साबजी...! मैं हूँ! सिक्योरिटी!

(चिनामा की आवाज सुनकर मद्रासन तुरंत चाय का कप और मोबाइल टेबल पर रखती है, और सोफे पर चढ़कर बुजु के घर में झाँकती है। बुजु एक कम्बल में खुद को पूरी तरह ढककर मंच पर प्रवेश करता है—उसके हाथ में एक छुरी है। वह दरवाजा खोलता है। एक ६० वर्ष का पतला-दुबला, नागा समुदाय का व्यक्ति अंदर आता है। बुजु झट से दरवाजा बंद कर देता है।)

चिनामा: दरवाजा खोलने में इतना समय क्यों लगा दिया, साबजी? दस बज रहे हैं, काम पर नहीं जाना क्या? और यह क्या? यहाँ इतना अँधेरा क्यों है? और आपने खुद को ऐसे कम्बल में क्यों छुपाया है? आपको बुखार है? और ये छुरी ऐसे क्यों पकड़े हो, साबजी? किसी का मर्डर करने का इरादा है?

बुजु: **(धैर्य खोते हुए)** अबे चुप! साँस तो लेने दे। बुलेट ट्रेन की तरह बस बोले ही जा रहा है।

चिनामा: माफ कीजिए, साबजी।

बुजु: **(रोते हुए)** हाय...! क्या बताऊँ चिनामा? कि कल रात मैं किस भयानक अनहोनी से बचा हूँ! अरे वह तो भोले बाबा की कृपा थी कि कल रात मैं बाल-बाल बच गया...नहीं तो आज तुम्हें मेरा कुचला हुआ सिर मिलता चिनामा! अरे

मुझे तो घर से बाहर कदम रखने में भी डर लग रहा है...कि कहीं वह गुल्ला फिर से चुन्नी बनाकर मेरे दिमाग को नारियल की तरह फोड़ने न लगे। इसलिए अब मैं कहीं नहीं जाऊँगा...भाड़ में गया काम-धंधा! जान रही तो खूब कमा लूँगा।

चिनामा: तो इतनी पीते ही क्यों हो, साबजी, कि भूत-प्रेत का आभास होने लगे।

बुजु: अरे, कल मैंने शराब नहीं पी थी चिनामा! और न ही मुझे कोई आभास हुआ है। यह सब उस मद्रासन का किया धरा है।

चिनामा: हाँ, तो यह बात भी मैं नहीं कह रहा हूँ, साबजी। यह सब तो आपके ही 'पड़ोसन', कमला मैडमजी का कहना है।

बुजु: **(अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए)** क्या मतलब है तुम्हारा?

चिनामा: मतलब यह, साबजी, कि आज सुबह ही मैडमजी ने सेक्रेटरी साबजी से आपकी शिकायत कर दी है। उन्होंने कहा है कि कल रात आप नशे में चूर होकर गुल्ला को मार रहे थे। और जब मैडमजी ने आपको रोकने की कोशिश की, तो आपने उन्हें चमड़ी उधेड़ देने और रेप की धमकी दी। उसके बाद आपने दो बोतल और चढ़ाई, जिसके कारण आपको गुल्ला में भूत का आभास हुआ और आपने उसे फिर से खूब मारा।

बुजु: (**अपनी सफाई देते हुए**) बाप रे बाप! यह मद्रासन तो खड़े-खड़े मुझे फाँसी पर चढ़ा देगी। यह सब बकवास है! उल्टा गुल्ला मेरा रेप करने वाला था...मेरा मतलब है कि...कल रात गुल्ला ने नींद में मुझ पर हमला किया था। इसलिए मैं उसे मार रहा था। और यह मद्रासन! यह खुद बीच में आकर मुझे सेक्रेटरी साहब की धमकी देने लगी...यहाँ तक कि मेरी जाति और मेरे बाप के बारे मे भी उल्टा-सीधा कहने लगी! इसलिए मुझे गुस्सा आ गया...और मैंने उसे चमड़ी उधेड़ने की बात कही थी, बस! यह रेप वाली बात बिल्कुल झूठ है। उसके बाद मैंने उसका मजाक उड़ाया, जिससे वह डायन गुस्सा हो गई...और फिर पता नहीं साली ने क्या काला जादू किया कि गुल्ला एकदम से बदल गया...और भूत बनकर मुझे

ही मारने लगा। इसलिए कंप्लेन तो मुझे करनी चाहिए कि किस डायन के बगल में मुझे घर दे दिया गया है! ...एक काम करो चिनामा, तुम गुल्ला को ढूंढकर ले आओ, अब वही सेक्रेटरी साहब को सब सच बताएगा।

चिनामा: पर, साबजी, गुल्ला ने तो सेक्रेटरी साबजी के सामने, मैडमजी के बयान पर हामी भर दी है।

बुजु: **(भावुक होकर)** क्या...? गुल्ला ने मेरे खिलाफ बयान दिया? पर गुल्ला ऐसा कैसे कर सकता है चिनामा? तीन साल से वह मेरे साथ मेरे छोटे भाई की तरह रह रहा है। भले ही मैं उसे उसकी बदमाशियों पर मारता हूँ...फटकारता हूँ...पर उसके लिए मेरे मन में हमेशा से एक अपनापन वाला लगाव ही रहा है। गुल्ला यह सब अच्छे से जानता है, और फिर भी उसने मेरे खिलाफ बयान दिया?

चिनामा: हाँ, साबजी, इसीलिए सेक्रेटरी साबजी आपको ऑफिस में बुला रहे हैं, चलिए।

बुजु: पर चिनामा, मैं निर्दोष हूँ!

चिनामा: अब आपकी बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा, साबजी।

बुजु: पर क्यों चिनामा?

चिनामा: क्योंकि एहि समाज का कानून है, साबजी। यहाँ अगर दोषी पहले कम्प्लेन करता है, तो वह समाज की नजरों में निर्दोष बन जाता है—और निर्दोष दोषी बन जाता है। उसके बाद निर्दोष चाहे जितना भी चीखे या चिल्लाए, उसकी सच्चाई सुनने वाला कोई नहीं होता, साबजी। छोटा मुँह बड़ी बात, साबजी, कहने को तो हम सब एक आज़ाद देश में रह रहे हैं, पर इस जात-पात की लकीरों ने, इस देश को कई खंडों में बाँट रखा है। और ऐसा नहीं है कि यह जात-पात की मार सिर्फ आपको लगी है, साबजी। देखा जाए तो इस देश के हर इंसान के दिल पर इस मार का निशान है। अब मुझे ही ले लीजिए, हम जैसों को तो कुछ लोग 'भारत' का ही नहीं मानते हैं। मैं पिछले पैंतालीस साल से इस बेइज्जती का सामना

कर रहा हूँ। पहले मैं भी आपके तरह लोगों से बहस करने लग जाता था। पर गुजरी उम्र ने यह सिखाया है, साबजी, कि शांत रहने में ही खुद की भलाई होती है। इसीलिए अब आप जब दूसरी जगह शिफ्ट करेंगे, तो इस बात का 'ध्यान' रखिएगा।

बुजु: दूसरी जगह शिफ्ट करेंगे, मतलब?

चिनामा: मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है, साबजी, कि अब आपको अपना सामान पैक कर लेना चाहिए।

बुजु: **(हैरान होकर)** पर चिनामा? ऐसे कैसे वे लोग मुझे तुरंत इस सोसाइटी से निकाल देंगे? और निकलकर मैं कहाँ जाऊँगा? इस शहर में मेरा कोई परिचित नहीं है...और इतने पैसे भी नहीं हैं कि तुरंत दूसरा घर ले सकूँ! इस महीने धंधा बहुत मंदा रहा है, जिसके कारण हाथ भी पूरी तरह खाली हैं। तुम कुछ करो चिनामा! तुम कहोगे तो मैं सेक्रेटरी साहब से माफी माँग लूँगा, उनके पैर पकड़ लूँगा...

चिनामा: नहीं-नहीं, साबजी, आपको इतना भी नीचे जाने की जरूरत नहीं है।

(कुछ क्षण मौन के बाद।)

आपके पास तीन हजार रुपये होंगे, साबजी?

बुजु: हाँ!

चिनामा: लेकर आइए।

(बुजु तेज़ी से विंग्स के अंदर जाता है। चिनामा कुछ सोचते हुए हॉल में गोल-गोल घूमने लगता है। मद्रासन दीवार के पीछे खुद को छुपाती है। थोड़ी देर बाद बुजु ५०० के नोटों को गिनते हुए मंच पर वापस प्रवेश करता है।)

बुजु: यह लो भाई चिनामा...प्लीज मुझे बचा लो!

(बुजु की आवाज सुनकर मद्रासन वापस झाँकती है। चिनामा पैसे लेकर अपने पैंट की जेब में रख लेता है।)

चिनामा: **(हँसते हुए)** साबजी, समझिए कि आपका काम हो गया। अब आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं है।

बुजु: क्या मतलब?

चिनामा: मतलब यह साबजी, कि मैं एहि खुशखबरी आपको सुनाने आया था। कि मैंने सेक्रेटरी साबजी से लास्ट वार्निंग दिलवाकर आपको बचा लिया है।

बुजु: क्या? तो फिर तुमने मुझसे ये तीन हजार रुपए क्यों लिए?

चिनामा: आपका काम किया न, साबजी, उसका दाम लिया।

बुजु: **(चिढ़कर)** तो इसका मतलब है कि, साला! यह सब ड्रामा तुमने मुझसे पैसे ऐंठने के लिए किया था, हाँ?

चिनामा: वाह साबजी, भाई से सीधे साले पर आ गए।

बुजु: तो वैसे करम कर, 'काम बेईमानी वाला और इज्जत चाहिए ईमान वाला!'

चिनामा: अरे साबजी, गुस्सा क्यों होते हो? अच्छा, आप मुझे एक बात बताइए? अगर मैं यह खुशखबरी आपको पहले सुना देता, तो आप मुझे बक्सीस देते? नहीं देते साबजी। और क्यों नहीं देते? क्योंकि आपका धंधा मंदा गया है। तब तो मेरे लिवर मातम मनाता। लेकिन अब आप भी खुश और मेरा लिवर भी खुश।

बुजु: भाग! भाग यहाँ से! नहीं तो साला जूता उठाकर मारेंगे!

चिनामा: 'बाप बड़ा न मइया...इज्जत जाए रही रुपइया!'

(चिनामा मुस्कुराते हुए प्रस्थान करता है। बुजु अपने जगह पर खड़ा चिनामा को गुस्से से घूरता है।)

बुजु: **(दर्शकों से)** अरे कंप्लेन तो मुझे इस चिनामा का करना चाहिए...! इस सोसाइटी में सब के सब नमूने रहते हैं—कोई चोर है...कोई डायन है...तो कोई बेईमान है! देखना, आप लोगों ने? कि कैसे यह चिनामा मुझसे पैसे लूटकर ले गया, साला...**(अपनी जबान काटता है।)** माफ़ करिएगा! गुस्से में मेरी जुबान थोड़ी बेलगाम हो जाती है। पर आप लोग ही बताइए? अगर कोई आपकी मेहनत की कमाई ऐसे लूट कर ले जाए...तो कलेजा नहीं जलेगा क्या? अरे, यह तो वही बात हो गई... 'कि खाया-पिया कुछ नहीं और गिलास तोड़ा तीन हजार रुपइया!', और यह सब फसाद की जड़, यह मेरी 'पड़ोसन' है! गजब देवी है भाई! रात में भूत बुलाती है और सुबह झूठा आरोप लगाती है। जब से मैंने इस घर पर कदम रखा है, तब से इस मद्रासन ने मेरा जीना हराम कर दिया है।

(बुजु झटके से खिड़की की तरफ मुड़ता है और मद्रासन को झाँकते हुए पाता है। मद्रासन तुरंत सोफे से उतरकर विंग्स के अंदर जाने लगती है। बुजु गुस्से में टेबल पर चढ़ता है और खिड़की में अपना सिर घुसाकर मद्रासन के घर में झाँकता है।)

अरे ओ मैडम...! तुम्हें शर्म नहीं आती है, मेरे घर में ताका-झाँकी करते हुए!

मद्रासन: **(खिड़की की तरफ मुड़ती है। ऊंचे स्वर में)** अय्यो, मई तुम्हारे घर में ताक-झाँक नहीं रही थी बिहारी! मई तो बस वो...धूल साफ कर रही थी। और उसी समय तुमने मेरेको देखा।

बुजु: चुप, साली झूठी! दिन के चौबीस घंटे क्या तू सिर्फ यही खिड़की साफ करती रहती है, हाँ? दूसरों की जात पर ताना कसने वाली! क्या तेरी यही सभ्यता है? कि बस दूसरे के घरों में ताका-झाँकी करना...चोरों की तरह दूसरों की बातें सुनना...रपे का झूठा आरोप लगाना, कला जादू करना, बोल?!

मद्रासन: अय्यो, बिहारी! अपनी जबान को लगाम दो...वरना मेरे से बुरा कोई नहीं होगा!

बुजु: अरे तुमसे बुरा और कुछ होगा भी नहीं मद्रासन! और मेरे ऊपर ऐसा घिनौना आरोप लगाकर तुमने इस बात को साबित भी कर दिया है। अरे तुम तो नारीत्व के नाम पर कलंक हो—कलंकिनी...!

मद्रासन: अय्यो, बिहारी! तुम हद से आगे बढ़ रहे हो! मई कहती कि चुप हो जाओ! वरना...तुम मेरेको जानते नहीं, कि मई तुम्हारे साथ क्या-क्या कर सकती।

बुजु: अरे...मुझे सब पता है कि तू क्या चीज है मद्रासन! तुम्हें बताने की जरूरत नहीं है...सोसाइटी में सब जानते हैं कि तुम कितनी घटिया हो! लोगों ने मुझे तुम्हारी कहानी बताई है—कि कैसे तुमने अपने पति को बर्बाद किया! पहले बिचारे पर डोमेस्टिक वॉयलेंस का झूठा केस करके उसकी नौकरी छुड़वा दी...उसके बाद बिचारे पर डाइवोर्स केस ठोक दिया; अलिमोनी के नाम पर उसका यह फ्लैट अपने नाम करवा लिया...और हर महीने बिचारे से बारह हजार रुपए चूस-चूस कर उसे पूरा कंगाल बना दिया। और अब पति को बर्बाद करने के बाद तुम मेरे पीछे पड़ी हो, हाँ? अब तू बता? तू डायन नहीं है तो और क्या है? अरे...डायन भी तेरे सामने शरीफ है! कम से कम सात घर छोड़कर वार करती है—तुम्हारे जैसे अपना ही घर नहीं उजाड़ती! अरे तुझ जैसी नीच तो मैंने अपनी जिंदगी में नहीं देखी है।

मद्रासन: **(दांत पीसते हुए)** मयने कहा चुप हो जाओ बिहारी।

बुजु: अरे हट! तेरी ऐसी की तेसी! जा-जाकर सेक्रेटरी साहब से जितना कंप्लेन करना है कर ले! सोसाइटी में सबको पता है कि तू किस घाट का पानी है। अरे इसलिए तू पूरी अकेली है! तेरा आगे-पीछे रोने वाला भी कोई नहीं है!

मद्रासन: **(चिल्लाकर)** मयने कहा, "चुप हो जाओ...!!'

(बुजु मद्रासन की चीख से स्तब्ध रह जाता है। मद्रासन की लाल बड़ी आँखें बुजु को गुस्से से घूर रही हैं।
विंग्स से शक्चुन्नी की आवाज आती है।)

गुल्ला: की रे...! अबार आशेगिलो...!

(गुल्ल चुड़ैल की तरह हँसते हुए मंच पर प्रवेश करता है।)

की रे? तोमर काने कि एकटा कनखजूरा दिम पारेचे? दीदी की बोलाम? सुनते पे चिस्स न...? आज के जमाई-शास्ति! तोर गाला केते अमर स्वामी को उपहार देबो...! अमरा आसची हरामि!

(गुल्ला दौड़ते हुए मद्रासन के घर से निकल जाता है। बुजु डरते हुए फौरन टेबल से उतरता है और बाहर का दरवाजा बंद करके विंग्स के अंदर भाग जाता है।)

दाराजा खुले दाओ हरामि...दाराजा खुले दाओ...!

(गुल्ला बुजु के घर के दरवाजे को जोर-जोर से पीट रहा है। मद्रासन अपनी जगह पर पुतला बनी खड़ी है। इसी के साथ मंच पर धीरे-धीरे अँधेरा छा जाता है।)

~ दृश्य — ४ ~

(आधी रात का समय। बुजु का घर अँधेरे में है। मद्रासन उजाले में सोफे पर एक लाश की तरह बैठी है और ऊपर सीलिंग को देख रही है। बुजु की कड़वी बातें लगातार उसके कानों में गूँज रही हैं, जिसके कारण उसका चेहरा गुस्से से पूरी तरह लाल है। तभी गुल्ला नींद में बड़बड़ाते हुए मंच पर प्रवेश करता है।)

गुल्ला: कहाँ ले जा रही हो मेरी डार्लिंग...आज हम क्या लुका-छुपी खेलने वाले हैं? उईमा...

(वह सोफे से टकराकर मद्रासन के पास गिर जाता है, मद्रासन का पैर पकड़ते हुए।)

ओ-ओह...यहाँ बैठी हो, डार्लिंग! आज नो छुपी—सीधा लुका! वह भी सोफा पर...

(वह मद्रासन का हाथ पकड़ लेता है।)

हाय...! तुम्हारा हाथ कितना कोमल है शोना-मोना, दिल चाह रहा है कि एक पप्पी ले ले—ले ही लेते हैं! उम्म्म्म...

(वह मद्रासन के हाथ को चूमने जाता है, कि तभी मद्रासन उसे एक जोर का तमाचा मारती है, जिससे गुल्ला का सिर मंच से जा टकराता है और वह बेहोश हो जाता है। मद्रासन अपनी क्रोध भरी नजरें दर्शकों की ओर टिकाती है।)

मद्रासन: (दर्शकों से) अय्यो...! तुम सब लोग मेरेको ऐसे क्यों देखता जी? बिहारी के मुँह से मेरी कहानी सुनकर, तुम सब लोग भी मेरेको विलन समझता जी? ...हाँ! मयने अपने 'कानवन' पर झूठा केस किया! और क्या करती मई?

साला मेरेको अपनी नौकरानी समझकर रखा था। चाहता था कि मई दिन भर बस घर पर रहकर उसके लिए दो वक्त का खाना बनाए, उसके माँ-बाप की सेवा करे, उसके बच्चे पैदा करे...बस? यही जीवन जी? मेरी इच्छाओं का क्या? मेरे सपनों का क्या?!

(उसकी आँखों से आँसू छलककर उसके गालों पर गिरते हैं।)

मई पंद्रह साल की थी। जब दिवाली के दिन पिता के कहने पर मई गाँव के विधायक के यहाँ मिठाई लेकर गई थी। विधायक का पूरा परिवार ऊपर छत पर पटाखे जला रहा था। और उसी शोर-गुल में...नीचे...विधायक ने नशे में मेरा रेप कर दिया। जब घर आकर मयने अपने पिता से यह बात कही...तो उन्होंने अपनी ऊँची आवाज के नीचे मेरे ही दर्द को 'अदक्काम' (दफना) दिया!

(एक गहरी सिसकी लेने के बाद।)

मेरी पढ़ाई-लिखाई रुकवा दी। मेरा घर से निकलना बंद कर दिया। मेरे सारे सपनों को कुचल दिया। ...और फिर, जब मई बीस साल की हुई तो मेरी शादी करवा दी। फिर क्या? मेरे कानवन के पास दोनों ताकत थी।

(हँसती है।)

'इन मर्दों की मर्दानगी अब सिर्फ इनके जबान और इनके बंदूक तक ही सीमित रह गई जी!'

(उसका चेहरा फिर क्रोध से सिकुड़ता है।)

यह है मेरी कहानी। यह सोसाइटी क्या बताएगा मेरी कहानी! कभी इस सोसाइटी ने मेरे से मेरी इस दसा का कारण पूछा? कभी मेरे दर्द को महसूस करने की कोशिश की? जो आए मेरी कहानी सुनाने वाले! जिस दिन साले मेरी पूरी कहानी सुनेंगे, कि किस तरह मेरी लाचारी का इन मर्दों ने फायदा उठाया, उस दिन सबका सिर शर्म से झुक जाएगा!

(वह तेज़ श्वास लेते हुए दर्शकों की ओर अपनी आँखें घुमाती है; उसकी क्रोधाग्नि में अश्रुपूरित आँखों से लगातार आँसू छलक रहे हैं। कुछ देर बाद, धीमे स्वर में।)

नहीं है न जवाब आप लोगों के पास भी जी? ...कोई बात नहीं। क्योंकि अब ताकत मेरी मुट्ठी में जी!

(वह अपनी कमर से एक छोटा पीला बैग खींचती है, पत्थर को बाहर निकालती है, और दर्शकों को दिखाती है।)

ऐसी ताकत...जिससे मई इस पूरी मर्दजाती को नंगा नाच नचवा सकती!

(वह बुजु के घर की तरफ देखती है।)

पर उससे पहले...मई इस बिहारी को सबक सिखाएगी। तेरा जबान कैची के जैसे चलता न बिहारी...तो अब तुम देखो कि मई कैसे तुम्हारी खुशियों पर 'जादू की कैंची' चलाती। सबसे पहले मई तुमको तुम्हारी बीवी से अलग करेगी...उसके बाद, मई तुम पर अपने प्यार का जादू करके...तुमको एक कुत्ते की तरह अपने गेट के बाहर बाँधेगी! तभी जाकर मेरे कलेजे को ठंडक मिलेगी जी। अब तुम देखो बिहारी...मई कैसे तुमसे तुम्हारा सब कुछ छिनती।

(वह पत्थर को अपनी मुट्ठी में कसती है, और अपनी आँखें बंद कर लेती है।)

'मेरी इच्छा—कि बुजु और उसकी बीवी का नाता टूट जाए। '

(वह अपनी आँखें खोलती है और एक खलनायक की तरह हँसने लगती है। मंच पर अँधेरा छाता है।)

~ दृश्य — ५ ~

(सुबह का दृश्य। बुजु के रोने की आवाज के साथ मंच प्रकाशित होता है, वह फूट-फूट कर रोते हुए मंच पर आकर बीच में बैठ जाता है।)

बुजुः हाय...! मैं तो लुट गया! बर्बाद हो गया! हे भगवान...! हे भोले बाबा! मेरी पूजा में क्या कमी रह गई थी? जो तुमने मेरा संसार उजाड़ दिया? यह क्या कर दिया तुमने भोले बाबा...?!

(गुल्ला, बुजु की आवाज सुनकर, दौड़ते हुए मंच पर प्रवेश करता है और सोफे पर चढ़कर खिड़की से बुजु को देखता है। पीछे से मद्रासन मुस्कुराते हुए मंच पर प्रवेश करती है।)

गुल्लाः (व्यग्रता भरे स्वर में) क्या हो गया दादा? आप रो क्यों रहे हैं?

बुजु: अरे गुल्ला...! मेरी जिंदगी बर्बाद हो गई! मेरी जोरू मुझे छोड़कर चली गई!

गुल्ला: हाययय...!

मद्रासन: **(गुल्ला को डपटते हुए)** चुप...! और नीचे उतरो! यह मेरा सोफा जी।

(गुल्ला तुरंत सोफे से उतरकर मद्रासन के घर से बाहर निकल जाता है। मद्रासन सोफे पर चढ़कर खिड़की से बुजु को झाँकती है। गुल्ला बुजु के घर में प्रवेश करता है और उसके पास आकर बैठ जाता है।)

गुल्ला: **(रोते हुए)** हाय...! आमार बउदी मोरे गैलो! आमरा दादा बेष्य हाऐ गेछे!

बुजु: क्या?

मद्रासन: **(खिड़की से, ऊँचे स्वर में)** अय्यो बिहारी! यह कह रहा कि तुम रंडवा हो गया जी।

बुजु: (गुस्से में) अबे, चुप साला कमीना! मेरी पुत्ती मारी नहीं है! अरे वह तो बस मुझे छोड़कर मायके चली गई है...कहती है कि मुझसे तलाक चाहिए।

गुल्ला: हाय...आमरा दादा अर्ध बेष्य हाऐ गेछे!

मद्रासन: हाँ, यह ठीक जी।

बुजु: (रोते हुए) क्या बताऊँ गुल्ला? पिछले सात साल से मैं हर सुबह अपनी पुत्ती से पूछता हूँ, 'कि कुछो चाहिए जी...?', और वह हमेशा मुझे हँसकर ना कह देती थी। पर आज...आज पहली बार उसने हाँ कहा! मुझे लगा कुछो साबुन, तेल, चनाचूर वगैरह चाहिए होगा—मैंने कहा बोलो? तो ससुरी एकदम से कहती है कि, 'हमको नौ लक्खा हार चाहिए...वह भी अभी के अभी!', अरे भाई? महीने का ५०-६० हजार कमाने वाला आदमी कहाँ से एक दिन में नौ लाख का हार खरीद पाएगा, बताओ? इसी बात पर मेरी उससे बहस हो गई...मना किया तो कहती है कि, 'हार नहीं दे सकते तो तलाक दे दो, हम हार देने वाला कोई दूसरा ढूँढ लेंगे!' और फिर बच्चों को छोड़कर मायके चली गई; अम्मा को भी धक्का मारकर माथे पर चोट पहुँचा दिया है।

(वह अपनी छाती पीटते हुए गला फाड़कर रोने लगता है। पीछे मद्रासन यह सब देखकर खुश होती है।)

गुल्ला: खुद को सँभालिए, दादा! हौसला रखिए...सब ठीक हो जाएगा। पर दादा? हमको एक बात समझ में नहीं आ रही? कि ऐसे कैसे कर सकती है पुत्ती बउदी? हमारा मतलब है कि, माँगना ही था तो बउदी 'एसी' की माँग करती...वैसे भी गर्मी कितनी बढ़ रही है गोबर-वॉर्मिंग के कारण। कहा बउदी इस गर्मी में हार लटकाते फिरगी? उनका गला कटकर गिर नहीं जाएगा क्या? और दादा...कहीं अगर गाँव में यह खबर फैल गई कि बउदी ने नौ लाख का हार पहना है...और कहीं किसी दिन कोई उनका गला काटकर हार ले गया तो? पुत्ती बउदी तो कुत्ती की मौत मारेगी।

बुजु: (गुल्ला की बात से बेचैन होकर) नहीं! नहीं! ए पुत्ती...ए पुत्ती...यह तुझे क्या हो गया है? अरे...इतनी मुश्किल से तो एक सीधी-साधी, कम नखरे वाली बीवी पाई थी मैंने। क्या नहीं दिया मैंने उसको; तीन लाख का फिक्स्ड डिपॉजिट, सोनी की बाली, चांदी के पायल, स्माट टीवी, ऑटोमैटिक वॉशिंग मशीन, एक रोटी मेकर—उसके हाथ बहुत नाजुक हैं न, तो रोटी बेलते बखत बहुत दुखते है, और चार बच्चे। पर आज एक हार ने मुझे हरा दिया गुल्ला, ए पुत्ती! ए पुत्ती!

गुल्ला: दादा, हम तो कहते हैं कि बाजार जाकर खुद को बेच दीजिए, और हार लेकर बउदी को दे दीजिए। दुनिया बहुत खराब हो गई है दादा, अगर एक बार अच्छी लड़की हाथ से निकल गई...तो फिर आप कुत्ते की तरह हर गली में मुँह मारते फिरोगे।

बुजु: नहीं! मुझे कुत्ता नहीं बनना! मुझे कुत्ता नहीं बनना! ए पुत्ती...! यह तुझे क्या हो गया है? यह तुम किस बात की सजा दे रही हो अपने पुत्तू को?

मद्रासन: **(खिड़की से ताना कसते हुए)** यह सब तुम्हारी काली जबान का नतीजा बिहारी...तुमने एक महिला का अपमान किया...इसीलिए देवी अम्मा ने तुमको सजा दिया।

(मद्रासन की हँसी गूँजती है। बुजु का चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है, वह मेंढक की तरह उछलकर टेबल पर चढ़ता है और मद्रासन के करीब आता है।)

बुजु: अच्छा...अब मैं समझा! यह मेरी काली जबान का श्राप नहीं...यह तुम्हारा काल जादू है मद्रासन, बोल? तूने ही मेरी पुत्ती पर काला जादू किया है न? बोल साली डायन!

गुल्ला: **(आक्रामक भाव में मंच से उठाते हुए)** ऐ दादा! दीदी को कुछ कहा तो—'अमी तोमाके मेरे फेलबो!'

(बुजु तेज़ी से टेबल से उतरकर गुल्ला के करीब आता है।)

बुजु: अरे गुल्ल...तुझे शायद पता नहीं है...पर इस मद्रासन ने ही तुम्हारे ऊपर काला जादू करके तुम्हारे अंदर यह चुन्नी घुसाई है। और इसी ने ही मेरी पुत्ती पर भी काला जादू किया है। तुम अपनी आत्मा की आवाज को सुनो गुल्ला! और इस साली डायन के चंगुल से खुद को बाहर निकालो...

(गुल्ला का शरीर गुस्से में काँपने लगता है।)

गुल्ला: **(धमकाते हुए)** ऐ दादा! आमी तोमाके शेषबार मोटो बोलची...चुप थाको!!

बुजु: बात को समझने की कोशिश कर गुल्ला...

(अचानक उसकी नजर गुल्ला के माथे पर लगी चोट की ओर जाती है। परवाह करते हुए।)

यह चोट कैसे लगी तेरे माथे पर?

गुल्ला: **(सामान्य होकर)** पता नहीं दादा? शायद सोते समय खुद को मार लिया होगा...

बुजु: **(गुस्से में अपने स्वर को ऊपर करते हुए)** अरे हट! तू डरता क्यों है? बोल ना कि इस नीच ने तुम्हें मारा है! तू अभी चल मेरे साथ सेक्रेटरी साहब के पास...आज इसकी सभी काली करतूत पूरी सोसाइटी को बताते हैं।

(वह फिर टेबल पर चढ़ता है। मद्रासन को गुस्से से घूरते हुए।)

साली पत्थर दिल! बच्चे को मरते बखत तेरे हाथ नहीं काँपे?

(तभी गुल्ला चुड़ैल की तरह हाँसते हुए अपने पूरे शरीर को जोर-जोर से हिलने लगता है। बुजु डरते हुए टेबल से उतरता है और पीछे की दीवार से चिपक जाता है। मद्रासन धूर्ततारूप से हँसती है।)

मद्रासन: अय्यो...क्या हुआ बिहारी? तुम्हारी बोलती क्यों बंद हो गई जी...? चलो अच्छा ही है कि तुम चुप हो गए। क्योंकि अब मई बोलेगी। तुम मेरे से पूछ रहे थे न? कि क्या मयने तुम्हारी बीवी पर जादू किया? तो सुनो बिहारी...हाँ! मयने ही तुम्हारे नौकर और बीवी, दोनों पर जादू किया। इसीलिए मेरी एक बात कान खोलकर सुन लो! अगर तुमने मेरे खिलाफ किसी से कुछ भी कहा...तो मई तुम्हारे परिवार का वह हाल करेगी, कि तुम बिन पानी मछली की तरह चटपटाओगे।

बुजु: तुम मुझे धमकी दे रही हो मद्रासन?

मद्रासन: हाँ बिहारी...तुम इसे मेरी धमकी ही समझो।

बुजु: यह तुम ठीक नहीं कर रही हो मद्रासन! आपसी झगड़े में तुम परिवार को क्यों बीच में ला रही हो?

मद्रासन: तुमको यह बात मेरे परिवार के ऊपर जाने से पहले सोचना चाहिए था। पर अब जब परिवार बीच में आ गया है...तो आ जाने दो—मेरेको बहुत मजा आ रहा जी।

बुजु: **(अपने हाथों को जोड़ते हुए)** भोले बाबा करे तुम्हारा काला जादू तुम पर ही भारी पड़ जाए मद्रासन।

(मद्रासन दोषपूर्ण रूप से हँसती है।)

मद्रासन: गुल्ला! वापस आ जाओ।

(गुल्ला मद्रासन के आदेश पर सामान्य होता है, और उम्मीद भारी नजरों से बुजु को देखता है।)

गुल्ला: दादा...

बुजु: अभी के लिए तू जा गुल्ला, और अपना ध्यान रखना।

(गुल्ला आँखों में आँसू लिए बुजु के घर से निकल जाता है। बुजु दौड़कर दरवाजा बंद करता है और विंग्स के अंदर भाग जाता है। मद्रासन हँसते

हुए सोफे से नीचे उतरती है और मंच के सामने वाले भाग पर आकर खड़ी हो जाती है।)

मद्रासन: **(खुश होकर, दर्शकों से)** अय्यो...! बिहारी को ऐसे देखकर मेरे दिल को थोड़ा सुकून मिला जी। पर, यह तो बस शुरुआत जी! असली खेल तो अब शुरू होगा, जब मई उस बिहारी पर अपना प्यार का जादू करेगी...और फिर उसके गले में कुत्ते का पट्टा बाँधकर, उसे अपने गेट के बाहर बाँधेगी। तभी जाकर मेरे कलेजे को ठंडक मिलेगी जी।

(वह कुछ सोचने लगती है।)

पर...मई उस बिहारी को अपने प्यार में कैसे फँसाएगी जी? अगर मयने उस पर डायरेक्ट जादू किया...और कहीं गुल्ला की तरह बिहारी में भी कोई आत्मा-वतमा गुस्स गया तो?

(वह फिर कुछ सोचने लगती है। थोड़ी देर बाद, चहकते हुए।)

अय्यो...एक आइडिया जी! मई यह इच्छा माँगती, कि जो लड़का मेरेको सबसे पहले देखे, उसे मेरे से बहुत प्यार हो जाए! और फिर, मई अपना चेहरा ढककर उस बिहारी के घर जाती। और जैसे ही बिहारी दरवाजा खोलेगा...मई अपना 'आदाई' हटा देगी! और फिर, मेरेको देखते ही बिहारी मेरे प्यार के जाल में फँस जाएगा जी...

(गुल्ला प्रवेश करता है। वह चुप हो जाती है। गुल्ला मद्रासन के पास आकर खड़ा हो जाता है। व्यंग्यात्मक ढंग से।)

अय्यो, क्या हुआ जी...? तुम क्यों रोता जी...? ओह! तुमको अपने पुराने मालिक पर बहुत तरस आ रहा जी...? उस दिन मेरे ऊपर तो बड़ा ठिठकारी मार-मार कर हँस रहे थे। अब हँसी क्यों नहीं आ रही जी? चलो हँसो...हँसो...**(चिल्लाती है)** मयने कहा हँसो!

(गुल्ला बनावटी मुस्कान भरता है। मद्रासन धूर्ततापूर्वक हँसती है। गुल्ला अपने आँसू पोंछता है।)

अब तुम भी मेरी एक बात कान खोलकर सुन लो! अगर दुबारा तुमने बिहारी के घर में कदम रखा...तो फिर अगला इंसान तुम्हारी अम्मा होगी, जो अपनी छाती पीट-पीटकर चिल्लाएगी कि, 'हाय...आमार गुल्ला मोरे गेलो...!', मेरी बंगाली ठीक है न जी?

(वह फिर हँसती है। गुल्ला सिर झुकाकर सिसकने लगता है।)

और एक बात! अभी के लिए तुम बाजार जाओ, और एक-दो घंटे के पहले मत लौटना। मेरेको कुछ जरूरी काम—ठीक है? अब तुम जाओ।

(गुल्ला मद्रासन के घर से निकल जाता है। मद्रासन दरवाजा बंद करती है और फिर सोफे पर चढ़कर खिड़की से बुजु के अँधेरे, सुनसान घर में झाँकती है। उसके बाद वह अपनी कमर से बैग को खींचती हुई सोफे से उतरती है और पत्थर को बाहर निकालते हुए वापस मंच के सामने वाले भाग में आकर खड़ी हो जाती है। वह पत्थर को अपनी मुट्ठी में कसती हुई अपनी आँखें बंद कर लेती है।)

मद्रासन: 'मेरी इच्छा—कि जो भी लड़का मेरेको सबसे पहले देखे, उसे मेरे से बहुत प्यार हो जाए।

(वह अपनी आँखें खोलती है और पत्थर को वापस बैग में रखती हुई विंग्स के अंदर चली जाती है (अपने कमरे में जाकर बैग को छुपा देती है।), फिर अपनी साड़ी के पल्लू को माथे पर ओढ़ते हुए वापस मंच पर आती है और बाहरी दरवाजा खोलती है—उसके सामने गुल्ला खड़ा होता है—दोनों की नज़रें एक-दूसरे से मिलती हैं।)

गुल्ला: मादाम बाजार में हम क्या करने जाएँ यह तो आपने बताया ही नहीं?

(अचानक गुल्ला को मद्रासन से गहरी प्रेम का एहसास होता है, वह मद्रासन को कामना भरी नजरों से देखने लगता है। शायर अंदाज में।)

आँधियों में बादल रवाना हो गया...मेरा यह दिल तेरा दीवाना हो गया!

आज करूँगा अपनी सभी हसरतें पूरी....मेरे मन का घोड़ा तेरे प्यार में बेलगाम हो गया!

(वह मद्रासन को कमर से पकड़ता है और उसे चूमने जाता है। मद्रासन चीखती है। इसी के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्य — ६ ~

(आधी रात का समय। मद्रासन का घर प्रकाशित होता है—वह उजाले में बाहर सोफे पर सो रही है। बुजु का घर अँधेरे में है—वह नशे में चूर, बड़बड़ाते हुए मंच पर प्रवेश करता है, और खिड़की की तरफ देखता है।)

बुजु: **(लड़खड़ाती जुबान में)** साली डायन, हमारे घर में अँधेरा करके खुद ससुरी लाइट में बैठी है। **(चिल्लाकर)** अबे ओए मद्रासन...! बेहरी हो गई है क्या?

(मद्रासन डरते हुए उठती है, और खिड़की के नीचे चुपचाप बैठ जाती है।)

क्या हुआ मद्रासन? हमेशा तो तुम इस खिड़की पर ही दिखती थी! आज क्या हुआ? अब हमारे घर में ताका-झाँकी नहीं करना है, हाँ? अच्छा! शायद तेरा मन भर गया होगा। अरे आना खिड़की पर! देख, साली कामिनी, हम तेरे लिए खुशखबरी लाए हैं!

(वह अपने पैंट की जेब से कुछ कागज निकालता है और खिड़की की तरफ उठता है।)

यह देख...! हमारी पुत्ती ने हमें तलाक के कागजात भेजे हैं! मानना पड़ेगा तेरी ताकत का मद्रासन...! तेरा काला जादू इतना स्ट्रांग था, कि हमारी पुत्ती ने आज ही तलाक के कागजात स्पीड पोस्ट से भेजवा दिया। वाह...वाह...!

(वह जोर-जोर से ताली बजाते हुए नाचता है, और फिर अपने घुटनों पर गिरकर रोने लग जाता है।)

...अरे हमने तेरा क्या बिगाड़ा था मद्रासन? जो तुमने हमारे साथ ऐसा किया...? अरे मानते हैं कि थोड़ा मुँहफट है हम! गुस्से में कह दिए होंगे कुछो उल्टा-सीधा—अरे पूरे सोसाइटी के सामने हमसे सॉरी बुलवा लेती! हम माफी माँग भी लेते,

सच्ची, माँ कसम! पर हमारी जिंदगी बर्बाद करने की क्या जरूरत थी मद्रासन...? क्या तेरे अंदर दया, प्रेम और ममता जैसी सभी भावनाएँ मर चुकी हैं?

(वह फिर से सुनसान खिड़की की तरफ देखता है।)

क्या हुआ? मर गई क्या मद्रासन...?!

मद्रासन: **(अपने सब्र को तोड़ते हुए)** अय्यो बिहारी...मई तुमको लास्ट वार्निंग देती। चुप हो जाओ, वरना मई अभी सेक्रेटरी को फोन करेगी।

बुजु: अच्छा...तो साली छुपके सुन रही है। अबे बुला सेक्रेटरी साहब को...! हम भी उन्हें सब बताएँगे कि कैसे तुमने अपने काले जादू से मेरा जीना हराम कर रखा है! अरे, हमें बरबाद करके तुम्हें सुकून नहीं मिलेगा मद्रासन...सुअर की मौत मारेगी तू!

मद्रासन: अय्यो बिहारी! चुप हो जाओ! नहीं तो...मई शक्चुन्नी को बुला देगी।

बुजु: **(खड़े होकर, अपना सीना चौड़ा करते हुए)** अरे हट...! नहीं डरते हम तेरी चुन्नी से! बुला अपनी भूतनी को साली! हमने भी आज जड़ी-बूटी ली है...! हमारे अंदर का बाघ आज जागा हुआ है! और आज तुम और तुम्हारी भूतनी देखेगी! कि जब एक बिहारी का भेजा फिरता है ना...तो फिर भेजा की माँ की आँख! बुला अपनी भूतनी को! साली को छुट्टी का दूध याद न दिलाया...तो मेरा नाम भी बृजेश नहीं! यही रुक साली डायन की बच्ची! हम अभी अंदर से आते है...

(बुजु बड़बड़ाते हुए विंग्स के अंदर चला जाता है। मद्रासन सोफे पर चढ़कर बुजु के घर में झाँकती है, और फिर अपने सिर को दबाते हुए वापस सोफे पर बैठ जाती है।)

मद्रासन: **(रोते हुए)** अय्यो...देवी अम्मा! आपने मेरेको किस यह मुसीबत में डाल दिया जी? एक तरफ वह गुल्ला, सुबह से मेरेको प्रेम भरी शायरी सुना-सुनाकर मेरा माथा खराब कर दिया। और अब यह बिहारी नशे में चिल्ला-

चिल्लाकर मेरे दिमाग की नसों को फाड़ता जी! ऊपर से मेरा पत्थर भी उसी कमरे में जी, जिसमें मयने उस जज्बाती गुल्ला को लॉक किया...और घबड़ाहट में मई वह पत्थर वापस लेना ही भूल गई। अय्यो...मई इतनी बड़ी 'मुत्ताअट्टनम' (बेवकूफी) कैसे कर सकती जी?

(वह सोफे से उठती है और पूरे हॉल का चक्कर लगाने लगती है। बेचैनी में।)

अब मई क्या करेगी जी? पत्थर के बिना मई अपनी इच्छा को कैसे उल्टा करेगी? अय्यो, देवी अम्मा! मेरेको कोई रास्ता दिखाओ? मई क्या करे? मई क्या करे...?

(उसकी नजर घड़ी पर जाती है। उत्तेजना से विंग्स के अंदर झाँकते हुए।)

रात के ढेर बज रहे जी। मेरेको लगता कि शायद गुल्ला सो गया होगा। मई चुपके से रूम के अंदर जाती...और पत्थर वापस लेकर आती।

(मद्रासन धीमी कदमों से विंग्स के अंदर चली जाती है। थोड़ी देर बाद, गुल्ला दबे पैर मंच पर प्रवेश करता है—वह हॉल का मीटर ऑफ करके घर को अँधेरा कर देता है, और फिर कोने पर रखा एक टेबल पर चढ़कर पुतले की तरह खड़ा हो जाता है। मद्रासन पत्थर के साथ वापस मंच पर प्रवेश करती है—अँधेरे से घबड़ाकर उसके हाथ से पत्थर मंच पर गिर जाता है।)

मद्रासन: अय्यो, यह बिजली कैसे चली गई जी? कहीं उस नशेड़ी बिहारी ने तो कुछ नहीं किया? उफ़...यह पत्थर भी कहाँ गिर गया जी।

(वह नीचे झुककर मंच को टटोलती है।)

अय्यो, टॉर्च जलाना पड़ेगा।

(वह उठकर टेबल के पास आती है, डेस्क से टॉर्च निकालकर जलाती है, और गुल्ला को टेबल के ऊपर देखकर जोर से चीखती है।)

गुल्ला: ऐ हुस्न की मलिका...ऐ मेरे दिल की रानी!

बुजु: **(अपने हाथ में एक छुरी लेकर चिल्लाते हुए वापस मंच पर प्रवेश करता है।)** कह चली गई...तेरी माँ की!

गुल्ला: तुम्हारे इस सौंदर्य को मैं शत-शत प्रणाम करता हूँ!

बुजु: बाहर निकल...! आज तुझे तेरा बाप याद दिलाता हूँ!

गुल्ला: दिल चाहता है कि तुम्हारी इन झील जैसी आँखों में डूब जाऊँ!

बुजु: तू आती है, कि मैं आऊँ!

(गुल्ला मद्रासन के ऊपर कूदता है। मद्रासन गुल्ला के चेहरे पर एक मुक्का मारकर इधर-उधर भागने लगती है। चीखते हुए।)

मद्रासन: बचाओ! बचाओ! मेरेको बचाओ बुजु...मई तुमसे माफी माँगती!

(गुल्ला मद्रासन को पकड़कर उसका मुँह दबा देता है।)

गुल्ला: मुक्का मारकर तुमने अपने आशिक का मुँह सूजा दिया!

बुजु:**(रोते हुए)** माफी माँगकर पगली ने तो रुला दिया।

(मद्रासन गुल्ला की उँगली को काटकर खुद को छुड़ा लेती है।)

मद्रासन: बचाओ...! बचाओ...!

(गुल्ला मद्रासन को फिर से दबोचता है और उसे विंग्स की तरफ घसीटने लगता है।)

गुल्ला: बचाओ इसे कोई इसके आशिक से...मोहब्बत करना गुनाह है...तो चीर दो मेरा सीना छुरी से!

मद्रासन: बचाओ! कोई मेरेको बचाओ!

बुजु: हाँ, मद्रासन...! बचाओ। मेरी नईया डूब रही है!

मद्रासन: अरे यहाँ मेरी इज्जत लूटने जा रही...मेरेको बचाओ!

बुजु: हाँ, मद्रासन...! मुझे भी कुछ ऐसा ही महसूस हो रहा है...कि जैसे आज किसी ने हमारी इजत लूट ली हो!

मद्रासन: बचाओ! कोई मेरेको बचाओ! गुल्ला मेरा इज्जत लूटने वाला जी!

बुजुः हाँ, मद्रासन...! एक गुल्ला ही था जिसने मुझे बचाया।

(बुजु दहाड़ते हुए मंच पर गिरकर बेहोश हो जाता है। आस-पास के पड़ोसी मद्रासन के घर का दरवाजा पीट रहे हैं। गुल्ला मद्रासन को खींचते हुए विंग्स के अंदर ले जाता है।)

मद्रासन: बचाओ...! बचाओ...! बचाओ...!!

(मद्रासन की चीख के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्य — ७ ~

(सुबह का दृश्य। बुजु का घर अँधेरे में है। मद्रासन का घर प्रकाशित होता है—वह सोफे पर बैठी है और हॉट-बैग से अपने माथे को सेक रही है, उसके दरवाजे पर दस्तक होती है।)

मद्रासन: कौन जी...?!

चिनामा: मैडमजी, मैं हूँ, चिनामा।

मद्रासन: दरवाजा खुला जी...अंदर आ जाओ।

(चिनामा प्रवेश करता है और मद्रासन के पास आकर खड़ा हो जाता है।)

चिनामा: गुड मॉर्निंग मैडमजी। सेक्रेटरी साबजी आपको बुला रहे हैं, आपका बयान लेने के लिए, कि कल रात क्या हुआ था। और अगर गुल्ला दोषी हुआ, तो सेक्रेटरी साबजी पुलिस बुलाकर कार्रवाई करवाएँगे।

मद्रासन: **(घबराते हुए सोफे से उठकर खड़ी हो जाती है।)** पुलिस! अय्यो, पुलिस बुलाने की क्या जरूरत जी? मेरा मतलब कि—गलती मेरी जी। जो मयने उस गुल्ला पर तरस खाकर उसे अपने घर में रखा। और वैसे भी गुल्ला की तो आदत है नींद में यह सब हरकतें करने की—तुम उस बुजु से ही पूछ लो। असल में कल रात मई एक डरावना सपना देख रही थी...इसीलिए गुल्ला के अचानक पास आने से मई जरूरत से ज्यादा घबरा गई। तुम जाकर सेक्रेटरी से कह दो कि मेरेको कोई कार्रवाई नहीं करवानी...और वह गुल्ला को वापस बुजु के पास भेज दे। और हाँ! उस गुल्ला से भी कह देना कि वह मेरे नजरों के सामने अब दोबारा कभी न आए! वैसे भी कल रात के हादसे के बाद मेरेको मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही, मेरा सिर घूमता...मेरे को बुखार चढ़ता...मेरेको आराम की बहुत जरूरत जी।

(चिनामा मद्रासन को घूरने लगता है।)

मद्रासन: अय्यो, तुम मेरेको ऐसे क्यों देखता जी?

चिनामा: कुछ सोच रहा हूँ, मैडमजी।

मद्रासन: अय्यो...तुम क्या सोचता जी?

चिनामा: ऐसा है मैडमजी, कि आपकी पिछली शिकायत में आपने यह कहा था, कि बुजु साबजी नशे में गुल्ला को पीट रहे थे। और अभी आप कह रही हैं कि गुल्ला की आदत है नींद में यह सब हरकतें करने की। तो मैडमजी? हो सकता है कि शायद उस समय भी बुजु साबजी के साथ कुछ ऐसा ही हुआ हो?

मद्रासन: **(नजरें चुराते हुए)** वह सब मई नहीं जानती जी, मयने जो देखा, मयने वही कहा, बस! और अगर मेरी बात झूठ थी...तो फिर गुल्ला ने क्यों मेरी बयान पर हामी भरी, बोलो? इसीलिए तुम ज्यादा ओवरस्मार्ट मत बनो! अब निकलो मेरे घर से! और जाकर सेक्रेटरी से कह दो कि मेरेको कोई कार्रवाई नहीं करवानी।

(चिनामा फिर से मद्रासन को घूरता है।)

मद्रासन: **(चिढ़कर)** तुम फिर मेरेको ऐसे क्यों देखता जी?

चिनामा: कुछ सोच रहा हूँ, मैडमजी।

मद्रासन: अब तुम क्या सोचता जी?!

चिनामा: ऐसा है, मैडमजी, कि आपका यह हीरो वाला काम मुझे कुछ खटक रहा है।

(मद्रासन प्रश्नात्मक ढंग से चिनामा को देखती है।)

मेरा मतलब है, मैडमजी, कि आप तो सोसाइटी में; झूठ बोलकर झगड़ा लगाने वाली, पीठ पीछे दूसरों की बुराई करने वाली, मोदीवाले, दूधवाले, सब्जीवाले का उधार रखकर उन्हें परेशान करने वाली, बच्चों के सामने बूढ़ों को अशब्द

कहने वाली, सोसाइटी की 'विलन-मैडम' हैं! और मैंने सुना है, मैडमजी, 'कि विलन हीरो बनने का दिखावा तब करता है, जब उसके पिछवाड़े में कोई नाग काट लेता है।'

मद्रासन: **(गुस्से से)** अय्यो चिनामा! मेरे से जबान सँभाल के बात करना, समझा? साला दो कोड़ी का दरवान! सोसाइटी में मेरेको विलन तुमने बनाया! मयने खुद अपने कानों से तुम्हारी और बिहारी की बात सुनी थी। बोलो? तुमने मेरेको ही विलन बनाकर उस बिहारी को बचाया न जी?

चिनामा: मुझे आप पर तरस आता है मैडमजी। सोसाइटी में आपको विलन मैंने नहीं, बल्कि आपके दुर्व्यवहार ने बनाया है। और रहा सवाल साबजी को बचाने का, तो हाँ मैडमजी, मैंने उनको बचाया था। क्योंकि साबजी ने पहले कई बार मुझसे गुल्ला की नींद में चलने की आदत पर नाराजगी जताई थी। इसीलिए मुझे शुरुआत से पता था कि आपकी शिकायत झूठी है। और मैंने सेक्रेटरी साबजी को बस एहि समझाया था कि शायद आपके समझने में कोई भूल हो गई होगी। मैडमजी, आपकी एहि समस्या है, आप सोचती हैं कि दूसरा हमेशा आपका बुरा चाहता है। पर असल में मैडमजी, यह सब आपकी ही आघात सोच है जो आपको सबसे दूर ले जा रही है। खैर, जाते-जाते मैं आपको यह बता दूँ, मैडमजी, कि सेक्रेटरी साबजी ने आपको और बुजु साबजी को लास्ट वार्निंग भेजा है। पिछले कुछ दिनों से सेक्रेटरी साबजी के पास आप दोनों की बहुत शिकायतें आ रही हैं। नौबत यहाँ तक आ गई है कि दूसरे परिवार अब आप दोनों को निकालने की माँग कर रहे हैं। इसीलिए मैं आपको एहि सलाह दूँगा, मैडमजी, कि आप अपने व्यवहार को थोड़ा सुधारिए, वरना कहीं आपको यह सोसाइटी छोड़नी न पड़ जाए।

मद्रासन: **(वापस चिढ़कर)** अय्यो...! सोसाइटी में सबको मेरा व्यवहार दिखता जी! पर उस नशेड़ी बिहारी की जुबान और उसका चिल्लाना! यह किसी को नहीं दिखता? मेरेको बदलने की जरूरत नहीं जी—'मई पूरी परफेक्ट—'सोसाइटी को

बोलो वह बदले! और जाकर उस सेक्रेटरी से कह दो! कि मई यह सब गीदड़ धमकी से डरने वाली नहीं जी! मई भी देखती कि कौन मेरेको मेरे घर से निकालता।

चिनामा: **(धीमे स्वर में)** 'विनाशकाल विपरीत बुद्धि—''।

मद्रासन: अय्यो, क्या कहा जी?

चिनामा: कुछ नहीं, मैडमजी।

मद्रासन:**(उत्पीड़न में)** अय्यो चिनामा...मेरे से लगना मत। तुम जानते नहीं मेरेको, कि मई तेरे साथ क्या-क्या कर सकती।

चिनामा: **(अपने चेहरे पर हल्की मुस्कान भरते हुए)** मैडमजी, मैं लेडीज लोगों की बहुत इज्जत करता हूँ। इसीलिए मुफ्त में आपको एक आखिरी सलाह दे देता हूँ। मैडमजी, 'आप जिस शक्ति का सहारा ले रही हैं न...वो शक्ति उल्टा आपको ही मिट्टी में मिला देगी।'

मद्रासन: **(घबराकर दो कदम पीछे लेती है। धीमे स्वर में)** तुम मेरे ऊपर नजर रखता जी? तुमको शर्म नहीं आती दूसरे के घर में ताक-झाँक करते हुए?

चिनामा: सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को।

(वह चोचलेबाज मुस्कान के साथ मद्रासन को सलाम करते हुए प्रस्थान करता है। मद्रासन दरवाजा बंद करती है।)

मद्रासन: **(रोते हुए)** अय्यो! यह सब क्या हो रहा जी? पहले मेरा जादू उल्टा पढ़ जाना...फिर कल रात का हादसा...और अब यह, चिनामा का मेरी जादुई पत्थर के बारे में जान जाना। अय्यो देवी अम्मा! यह तुम मेरेको किस बात की सजा देती जी? ...वह तो अच्छा हुआ कि कल रात मेरेको सही समय पर पत्थर मिल गया, और मयने अपनी इच्छा उलटी कर दी...नहीं तो आज मई किसी को मुँह दिखाने के लायक नहीं रहती जी।

(वह चिंतित होकर हॉल का चक्कर लगाने लगती है।)

अय्यो...कहीं चिनामा ने सेक्रेटरी को पत्थर के बारे में बता दिया तो? फिर तो बुजु और गुल्ला भी चुप नहीं बैठेंगे, और मेरा सारा करतूत उगल देंगे। अय्यो...यह मई किस मुसीबत में पड़ गई जी? अगर कहीं पूरे सोसाइटी के सामने यह पत्थर वाली बात खुल गई तो? फिर तो पक्का सब मेरे से मेरा पत्थर छीनकर, मेरे हाथों में हथकड़ी पहना देंगे!

(वह अपनी दोनों कलाइयाँ अपनी आँखों के सामने लाती है। अपनी कल्पना से डरते हुए।)

नहीं—नहीं! मई जेल नहीं जाना चाहती! मई जेल नहीं जाना चाहती! मई एक काम करती...कुछ समय के लिए मई इस पत्थर को कहीं छुपा देती...अगर बात बिगड़ी भी तो, मई चिनामा और गुल्ला को झूठा बना देगी।

(वह हँसती है, और फिर रोने लग जाती है।)

अय्यो...यह सब क्या हो गया जी? मयने क्या सोचा था, और क्या हो गया जी? अय्यो, मेरा सिर झूले की तरह घूमता, मेरे आँखों के सामने अँधेरा छाता—मई थोड़ा रेस्ट करने जाती।

(मद्रासन हॉल की बत्ती बुझाकर अपने घर को अँधेरा कर देती है और विंग्स के अंदर चली जाती है। गुल्ला, बुजु के घर में प्रवेश करता है और हॉल की बत्ती जलाकर उसके घर को प्रकाशित कर देता है।)

गुल्ला: बुजु दादा...ओ बुजु दादा...!

(वह पुकारते हुए विंग्स के अंदर जाता है। विंग्स से गुल्ला के चिल्लाने की आवाज आती है।)

आ...ऊ...ई...अरे दादा! आप क्या कर रहे हैं?

(गुल्ला एक चादर से पूरी तरह ढका हुआ है। बुजु अपने एक हाथ से गुल्ला को गले से पकड़ रखा है, और उसके दूसरे हाथ में एक फोर्क है जिसे वह गुल्ला की कमर में चुभा रहा है। दोनों मंच पर प्रवेश करते हैं।)

बुजु: (ऊँचे स्वर में) क्यों बे मद्रासन का चमचा! ऐसे चोरों की तरह मेरे घर में घुसकर क्या देखने आया है...कि मैं अभी तक जिंदा हूँ या मर गया, हाँ? कहाँ है तेरी वह डायन मैडम? बुला उसे!

(वह गुल्ला को खिड़की की तरफ खींचते हुए ले जाता है। चिल्लाकर।)

अरे ओ डायन...! कहाँ चली गई? अच्छा...अँधेरे में छुपकर देख रही है मेरे जीवन का तमाशा? अरे सामने आ! और देख, अभी हम जिंदा हैं! और तुम्हारी इस भूतनी का नट्टी टिप रहे हैं!

(वह गुल्ला के गले को कसकर दबाता है। गुल्ला दर्द में चीखता है।)

गुल्ला: आ...दादा, लाग्छे!

बुजु: लाग्छे, बीटा?

(वह गुल्ला के ऊपर से चादर हटाता है और उसे मंच पर पटक देता है, फिर वह गुल्ला के पेट पर बैठकर उसे फोर्क दिखाता है।)

...उस दिन जब गिलास को हथौड़ा बनाकर मेरे सिर को कुच रहा था? तब क्यों नहीं पूछा...'दादा लाग्छे?' क्या हुआ? आज तेरी चुन्नी छुट्टी पर है क्या, हाँ? या फिर मेरा साहस देखकर गीली हो गई है? आज अपना शरीर नहीं हिल रहा है? चल! हिला अपना शरीर...और बोल खाती बंगाली में, "ए टा की....!', ए टा 'काटा-छम्मच" और आज अमी तूमाके चाउमिन बनाकर खाऊँगा...!

(वह फोर्क को हवा में ऊपर उठाता है और जोर से गुल्ला के छाती के करीब ले जाकर रोक देता है।)

गुल्ला: आई...उ...दादा...माफ कर दीजिए!

बुजु: क्या सच में तुम्हारे अंदर से वह चुन्नी निकल गई है?

गुल्ला: **(घबराहट में घूंट भरते हुए)** हाँ, दादा! हम सच कह रहे हैं! हम मादाम के सभी जादू से मुक्त हो गए हैं। आप खुद ही देखिए...आपने मादाम को इतना कुछ कहा, पर फिर भी हम ही अपनी जीवन की भीख माँग रहे हैं।

(बुजु गुल्ला के ऊपर से उतरता है। दोनों मंच पर बैठते हैं।)

बुजु: मद्रासन का जादू? तो मेरा शक सही निकला, कि वह मद्रासन एक डायन है! लेकिन तुम उसके काले जादू से कैसे छूटे?

गुल्ला: दरअसल दादा, कल आपके और मादाम के झगड़े के बाद, जब हम मादाम के घर लौटे, तो उन्होंने हमको खूब डाँटा और धमकाया। और फिर हमको एक-दो घंटे के लिए बाजार जाने को कहा। हम निकल गए। लेकिन फिर हमको ध्यान आया...कि मादाम ने यह तो बताया ही नहीं कि बाजार में हम क्या करने जाएँ? यही पूछने के लिए जब हम वापस गए...और जैसे ही मादाम ने दरवाजा खोला...और हमने उनको देखा...तभी अचानक दादा...हमारी आँखों के सामने सब कुछ अँधेरा हो गया था...हर जगह बस मादाम का ही चेहरा दिखाई दे रहा था...ऐसा लग रहा था दादा...मानो मादाम को पाना ही हमारी जिंदगी का एकमात्र मक़सद हो। उसके बाद क्या हुआ, हमको कुछ याद नहीं। लेकिन दादा...कल देर रात जब हम वापस होश मे आए, तो हमने खुद को मादाम के बिस्तर पर पाया...और मादाम ठीक हमारे सामने, जमीन पर पड़ी, मदद के लिए चिल्ला रही थी। हम डरकर वहाँ से भागे; और जैसे ही हमने दरवाजा खोला...तो देखा कि बाहर बहुत लोग जमा हो गए थे—सेकरती साब भी थे। फिर उन्होंने हमको पकड़कर चिनामा के कमरे में बाँध दिया। पूरी रात हम वहीं बँधे रहे दादा। पर अभी, कुछ देर पहले, चिनामा ने हमसे कहा कि मादाम ने हमको माफ कर दिया है, और आपके पास वापस जाने को कहा है।

बुजु: मद्रासन ने तुम्हें किस चीज के लिए माफ कर दिया?

गुल्ला: दादा? आप क्या कल रात बाहर थे? क्या सच में आपको नहीं पता कि कल रात क्या हुआ था? अरे दादा...यह बात तो अभी सोसाइटी का हॉट टॉपिक बनी हुई है...हर जगह बस यही चर्चा चल रही है।

बुजु: अब नाटक बंद कर और टॉपिक बता।

गुल्ला: **(अपनी स्वर नीचे करते हुए)** यही कि दादा...कल रात हम मादाम के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश कर रहे थे।

बुजु: **(हैरान होकर)** क्या? पर कल रात तो मद्रासन हमारे सपने में चीख रही थी—'की बचाओ गुल्ला...कोई मेरा इजत लूटने वाला जी।'

गुल्ला: **(वाक्य को सही करते हुए)** नहीं—नहीं, दादा! मादाम कह रही होगी कि—' कोई बचाओ...गुल्ला मेरा इजत लूटने वाला जी।', और वह सपना नहीं, हकीकत थी दादा।

बुजु: ओ...!

गुल्ला: नशे में आपका शब्द इधर-उधर हो गया दादा।

बुजु: हम्म्म्म...पर तुम्हें कैसे पता चला कि मैं नशे में था?

गुल्ला: क्योंकि दादा अभी तक आपकी उतरी नहीं है। अरे दादा...होश में आइए और हमारी बात ध्यान से सुनिए।

(वह खिड़की की तरफ झाँकता है। धीमी स्वर में।)

कुछ दिन पहले हमने एक चमकीला पत्थर चुराया था। काफी महँगा लग रहा था दादा, इसलिए हमने सोचा कि उस पत्थर को बेचकर...हम यहाँ एक घर ले लेंगे और शादी कर लेंगे। पर उस पत्थर पर मादाम की नजर पड़ गई...और उन्होंने वह पत्थर हमसे जबर्दस्ती चुरा लिया। **(फुसफुसाते हुए)** दादा...हमको लगता है कि शायद मादाम उसी पत्थर से जादू कर रही हैं।

बुजु: हट! क्या रियलिटी में फंतासी घुसा रहा है? जादुई पत्थर! ऐसा कुछ नहीं होता! मुझे पूरा यकीन है कि मद्रासन एक डायन है और काला जादू करती है, इसलिए हम दोनों को किसी अघोरी या तांत्रिक के पास जाना चाहिए।

गुल्ला: अरे दादा...आप समझ क्यों नहीं रहे हैं! मादाम के घर में अचानक से दो टीवी हवा में प्रकट हो जाना, हमारा आपके खिलाफ चले जाना, पुत्ती बउदी का तलाक माँगना, शक्चुन्नी, और हमारा मादाम से प्यार होना—यह सब कांड मादाम के पत्थर पाने के बाद से हो रहा है। और दादा...कल रात भी जब हमको होश आया...तो हमने मादाम के हाथ में वही पत्थर देखा था। हमको पूरा यकीन है दादा, कि मादाम से कुछ तो गलत हुआ होगा, तभी कल रात उन्होंने हमारे ऊपर से अपना सारा जादू उल्टा कर दिया और हम शक्चुन्नी के चंगुल से बच गए। यह भी तो सोचिए दादा...कि मादाम ने हम दोनों को जेल भेजने का इतना सुहाना अवसर क्यों छोड़ दिया? क्योंकि मादाम जानती हैं, कि अगर पुलिस केस हुआ...तो पत्थर वाली बात भी सामने आ सकती है। और दादा...हमको तो लगता है कि यह प्यार का जादू भी मादाम शायद आप पर ही चलने वाली थी। नहीं तो आप ही सोचिए, अचानक क्यों मादाम हमको बाजार भेजेंगी?

बुजु: **(शाबाशी देते हुए)** वाह रे गुल्ला, वाह...! क्या बात है! तुमने तो एक ही झटके में केस को सॉल्व कर दिया—बंगाल का नाम रोशन कर दिया, वाह-वाह!

गुल्ला: धन्यवाद दादा। आपके जैसे हम भी अब तक इसे काला जादू ही समझ रहे थे। और अगर कल रात हमने मादाम के हाथ में वह पत्थर नहीं देखा होता, तो अभी तक हम दोनों गलत दिशा में ही जा रहे होते दादा। रात भर हम कड़ी को कड़ी से मिला रहे थे...और अभी, जब हमको पता चला कि मादाम ने हमको माफ कर दिया है...तब हमारा सारा शक यकीन में बदल गया।

बुजु: **(मंच से उठता है, और धीमे कदमों से मंच के आगे वाले भाग में आकर खड़ा हो जाता है।)** बहुत अच्छी कड़ियाँ मिलाई हैं, गुल्ला...बहुत खूब! अब मुझे सब कुछ समझ में आ गया है। तो वह मद्रासन मुझे अपने प्रेम के जादू

में फसाने वाली थी, हाँ? अब उसके अगले जादू करने से पहले, मैं उसे अपने झूठे प्रेम के जाल में फँसाकर उससे वह पत्थर चुरा लूँगा। और फिर हम दोनों उस पत्थर वाली डायन को इस सोसायटी से धक्के मारकर निकलवाएँगे।

गुल्ला: **(संभ्रमित होकर)** पर दादा, हम वह पत्थर कैसे चुराएँगे?

बुजु: **(दृढ़ता से)** अरे गुल्ला! तू टेंशन को अपनी जेब में डाल...और अब बस इस बिहारी का कमाल देख!

(बुजु गुल्ला को इशारे से अपने पास बुलाता है। गुल्ला फुर्ती से मंच से उठता है और बुजु के करीब आ जाता है। बुजु अपने मुँह को छुपाते हुए गुल्ला के कान में फुसफुसाने लगता है। इसी के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्य — ८ ~

(सैक्सफोन की धुन के साथ मंच प्रकाशित होता है। बुजु लाल शर्ट और सफेद पैंट में, मंच के कोने पर खड़ा होकर सैक्सफोन बजा रहा है। मद्रासन अचंभित होकर मंच पर प्रवेश करती है, और सोफे पर चढ़कर खिड़की से बुजु को देखती है।)

मद्रासन: अय्यो बिहारी...तुम क्या करता जी?

बुजु: **(धीरे-धीरे खिड़की की तरफ मुड़ते हुए, शायर अंदाज में)** ऐ आसमान में रहने वाली परियों की रानी!

ऐ मेरे दिल में बसी मेरी अधूरी कहानी!

मेरा जीवन तो एक कोरा कागज है...मार दो उसमें अपने प्यार का धब्बा...

अरे ओ दुनिया वालों...देखो-देखो-देखो! आ गई मेरी मोटप्पा!

मद्रासन: अय्यो बिहारी, यह तुमको क्या हुआ जी?

बुजु: प्यार, इश्क, मोहब्बत, दर्द, चुभन, जलन, सरसररपन, थरथररपन, तड़पन, धड़कन, अर्पण, दर्पण, समर्पण...

मद्रासन: बस करो जी, मई समझ गई। तुम क्या चाहता जी?

बुजु: **(टेबल पर चढ़कर मद्रासन के करीब आते हुए)** मैं अपने जीवन का लक्ष्य चाहता हूँ, मोटप्पा! यह लिट्टी खाने वाला रोमियो अपनी जूलिएट के प्यार के सांबर में डूब मारना चाहता है!

(वह अपनी शर्ट की जेब से एक लाल गुलाब निकालकर अपने दाँतों के बीच रखता है और मद्रासन के चेहरे के पास ले जाता है।)

मद्रासन: **(हिचकिचाते हुए)** ऐ...उम...अय्यो, मई यू गई और यू आई जी।

(मद्रासन फौरन सोफे से उतरती है और दर्शकों के करीब आती है। गुल्ला विंग्स से बाहर आकर इशारे से बुजु को अपने पास बुलाता है और उसके कान में फुसफुसाने लगता है ।)

मद्रासन: **(दर्शकों से)** अय्यो? मयने तो कोई इच्छा नहीं मांगी जी? तो फिर इस बिहारी के सिर पर मेरे प्यार का बुखार कैसे चढ़ गया? ...कहीं यह बिहारी मेरे साथ कोई खेल तो नहीं खेल रहा जी? नहीं—नहीं! इस फटू में इतनी हिम्मत कहां कि वह मेरे से पंगा लेगा।

(मद्रासन हँसती है। बुजु बीच में आकर मंच पर बैठ जाता है। गुल्ला विंग्स के अंदर से हारमोनियम बजाता है।)

बुजु: हर शाम मदहोशी में बीत गई, मेरी आँखें तेरी राह को तरस गईं!

हर सूरज उगा उस उम्मीद की किरणों के संग, कि किसी और जन्म में ही सही, पर तुम्हें पाने की यह फरियाद, पूरी जरूर होगी!

मद्रासन: **(हैरानी से)** अय्यो...यह बिहारी तो ठीक वैसे ही शायरी बोल रहा जी, जैसे कल वह गुल्ला बोल रहा था। अगर सच में यह पत्थर का जादू हुआ तो? मेरेको ऐसा मौका गँवाना नहीं चाहिए जी।

बुजु: मैं इस दिल का क्या करूँ...? जो बस तुम पर ही मरता है!

इस जिस्म का क्या करूँ...? जो तुम्हारे छुवन के तड़पन में तड़पता है!

(वह मंच से उठकर बीच की दीवार पर चिपक जाता है।)

मजनू के दिल का आखिरी फरियाद हूँ, क्या मैं भी अधूरा रह जाऊँगा!

नहीं है अगर तुझे मेरे प्यार पर यकीन, तो मैं अभी सूली पर चढ़ जाऊँगा..!

(मद्रासन दौड़ते हुए बीच की दीवार से चिपक जाती है।)

मद्रासन:(नाटक करते हुए) अय्यो, ऐसा नहीं करना, बिहारी! सच तो यह है कि, मेरेको भी तुमसे लड़ते-लड़ते तुमसे सच्चा वाला प्यार हो गया जी...! तुमको पाकर मई खुद को कितनी भाग्यशाली समझती जी।

बुजु: मद्रासन...!

मद्रासन: बिहारी...!

बुजु: मद्रासन...आओ हम अपने बीच की इस दीवार को तोड़ दें!

मद्रासन: अरे सुनते हो...! देखो-देखो बिहारी क्या कहता जी...?!

बुजु: गुल्ला...! तोड़ दो हमारे बीच की इस दीवार को!

(नृत्य दृष्टि: गुल्ला स्पीकर में 'एक चतुर नार' गाना बजाते हुए—अपने हाथ में एक बड़ा हथौड़ा लिए दौड़ता हुआ मंच पर प्रवेश करता है, और बीच की दीवार को तोड़कर दोनों घरों को एक कर देता है। फिर दोनों नाचते-गाते (जिसमें मद्रसान भी शामिल हो जाती है।) कई तरीकों से मद्रासन के कमर से पत्थर के बैग को चुराने की कोशिश करते हैं। पर अंत में दोनों बैग चुराने में असफल रह जाते हैं। गाने के अंत के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ १० मिनट के विश्राम के बाद ~

~ दृश्य — ९ ~

(मंच प्रकाशित होता है। सुबह का समय। बुजु मंच के बीच में सोफे पर बैठा है और अपने पेट के दोनों किनारों को दबा रहा है। गुल्ला सोफे के पीछे से उसका सिर दबा रहा है।)

बुजु: **(कांपते स्वर में)** हाय...! और थोड़ा जोर से दबा गुल्ला! दर्द से सिर फटा जा रहा है। ऐसा लग रहा है...जैसे मेरा दिमाग बम की तरह विस्फोट होने वाला है।

गुल्ला: अरे दादा, यह समय दिमाग को विस्फोट करने का नहीं, बल्कि कोई धाँसू प्लान सोचने का है। लाख कोशिशों के बाद भी, वह पत्थर अभी तक हमारे हाथ नहीं लगा है। कोई दमदार प्लान सोचिए दादा...ताकि हम दोनों मादाम के अगले जादू करने से पहले वह पत्थर चुरा लें।

बुजु: अरे यह प्लान ही तो सोच-सोचकर मेरा दिमाग अब पूरा हैंग हो चुका है। साला, ऐसे कैसे अपना हर प्लान फेल हो सकता है, हाँ?!

(दर्द में वह अपने माथे को पकड़ता है।)

आ...नहीं! अब और कोई प्लान सोचने की क्षमता नहीं है मेरे दिमाग में।

गुल्ला: **(ताना मारते हुए)** क्यों दादा? उस दिन तो बड़ा सीना तानकर कह रहे थे, 'कि अब देखो इस बिहारी का कमाल!', अब क्या हुआ? फुस्स...

बुजु: **(चिढ़कर, गुल्ला का बाल खींचते हुए)** अबे साले! दो-तीन बार तो वह पत्थर तेरे हाथ भी लगा था। तब तुम क्यों फुस्स हो गया था, हाँ? एक नन्हा-मुन्ना सा पत्थर नहीं चुरा पा रहा है...और साला खुद को प्रोफेशनल चोर कहता है।

गुल्ला: **(खुद को बुजु से छुड़वाते हुए)** अब आपको क्या बताएँ दादा...यह बात हमको भी अंदर से बहुत कचोट रही है। आप जानते हैं दादा...**(अपनी छाती**

चौड़ी करते हुए) हमने अब तक छप्पन चोरियाँ की हैं! इतनी सफाई से, कि आज तक न किसी की माँ और न किसी का बाप हमको पकड़ पाया है। पर न जाने क्यों दादा...हमारा कोई भी तजुर्बा मादाम के केस में काम नहीं आ रहा है? ऐसा लगता है दादा...जैसे वह पत्थर खुद ही मादाम से अलग होना नहीं चाहता। **(डरते हुए)** हम कह रहे हैं दादा, ये कोई ऐसा वैसा पत्थर नहीं है...ये एक शैतानी पत्थर है! और जिसके काले जादू के शिकंजे में हम सब लोग फँस चुके हैं।

बुजु: **(डपटते हुए)** अबे, चुप कर! कोई प्लान नहीं सूझ रहा है तो बस बातें बना रहा है।

गुल्ला: अरे दादा, हम क्या करें? मादाम दिन भर उस पत्थर के बस्ते को अपनी कमर में खोसकर रखती हैं, एक मिनट के लिए भी बस्ते को खुद से दूर नहीं करतीं। ऐसे में हम कैसे उस बस्ते को चोरी करें, बताइए? **(हिचकिचाते हुए)** पर दादा...आप और मादाम तो एक ही कमरे में सोते हैं...तो मादाम के सोने के बाद आप उस बस्ते को चुरा लीजिए।

बुजु: अब तुमसे क्या छुपाऊँ गुल्ला। क्या कहूँ? कि किस डर के साथ मैं उस डायन के साथ एक ही बिस्तर पर सोता हूँ। तुम्हे पता है? वह मद्रासन अपनी एक आँख खोलकर सोती है...और इतना ही नहीं, अगर मैं बाथरूम भी जाऊँ, तो उसकी काली पुतली इधर-उधर नाचते हुए मुझे ही फॉलो करती है। और खर्राटे, खर्राटे तो ऐसे लेती है जैसे मगरमच्छ आहें भर रहा हो। रात भर मैं चादर के भीतर बस सोने का नाटक करता हूँ। कल रात तो मैं डर से बाथरूम करने भी नहीं गया...इसी कारण मेरे गुर्दे में तेज दर्द हो रहा है। **(डरते हुए)** गुल्ला! मुझे तो लगता है कि वह शैतानी पत्थर मद्रासन को अपने वश में करके उसे चुड़ैल बना रहा है...

(दोनों की नज़रें एक होती हैं। दोनों डरकर चिल्लाते हैं।)

एक साथ: क्या हुआ?!

बुजु: तुम डरे क्यों?

गुल्ला: हम नहीं...आप डरे दादा...इसलिए हम भी डर गए।

बुजु: मैं नहीं...तुम डरे गुल्ला...इसलिए मैं भी डर गया। यह सब क्या हो रहा है? मैं पागल हो रहा हूँ! मैं पागल हो रहा हूँ!

गुल्ला: अरे दादा...यह पागल होने का समय नहीं है। कोई प्लान सोचिए ताकि हम दोनों इस झँझट से बच सकें।

बुजु: भाड़ में गया प्लान! अब मुझसे और यह प्यार का नाटक नहीं होगा, मैं जा रहा हूँ!

(वह सोफे से उठकर विंग्स की तरफ जाने लगता है।)

गुल्ला: पर दादा, आप कहाँ जा रहे हैं?

बुजु: **(विंग्स के पास आकर रुकता है। गुल्ला की तरफ मुड़ते हुए)** मैं यह सोसाइटी छोड़कर जा रहा हूँ! और जाकर ससुरा किसी बैंक में डाका डालकर...या बाजार में खुद को बेचकर, नौ लाख का हार खरीदूँगा और अपनी पुत्ती को वापस घर ले आऊँगा। और वैसे भी, अगर मैं यहाँ से चला गया, तो फिर मद्रासन भी मेरा पीछा छोड़ देगी। न मैं रहूँगा, न मद्रासन मेरा बजाएगी।

(वह अजीब ढंग से हँसने लगता है।)

यह मुझे क्या हो रहा है...? मैं भी चुड़ैल बन रहा हूँ...!

गुल्ला: **(धिक्कारते हुए)** छी दादा! मर्द होकर आप रणभूमि छोड़कर भाग रहे हैं! हमको आपसे यह उम्मीद नहीं थी, दादा! आप तो निहायत मतलबी निकले।

बुजु: अबे चुप! जो कहना है कह ले...मुझे फर्क नहीं पड़ता। भूत बने से पहले मैं जा रहा हूँ, तुझे चलना है तो चल।

गुल्ला: **(दौड़कर बुजु की एक टाँग पकड़ लेता है। उसे खींचते हुए)** आप ऐसे नहीं जा सकते दादा...अभी आपको यह नाटक और करना पड़ेगा, ताकि हम वह पत्थर चुरा सकें...

बुजु: अबे हट! छोड़ मुझे...

गुल्ला: अरे दादा...ऐसा मत करो...पुत्ती बउदी को वापस लाना है कि नहीं?

बुजु: वह मैं देख लूँगा...तुम मेरा पैर छोड़ो, बस!

(तभी मंच के बीच में पत्थर वाला बैग गिरता है—जिसे बुजु और गुल्ला बम समझकर डरते हैं और भागकर सोफे के पीछे छिप जाते हैं। थोड़ी देर बाद, दोनों अपना सिर सोफे के पीछे से निकालकर बैग को देखते हैं। फुसफुसाते हुए।)

गुल्ला: दादा, पत्थर वाला बस्ता।

बुजु: यह किसने फेंका?

गुल्ला: पता नहीं दादा।

बुजु: कहीं मद्रासन ने इसमें बम भरकर तो नहीं फेंका?

गुल्ला: चलकर देखें क्या दादा?

बुजु: हाँ चल।

(दोनों हनुमान चालीसा पढ़ते हुए बैग के करीब आते हैं। गुल्ला बैग उठाकर उसे खोलता है और एक कंकर निकलता है।

बुजु और गुल्ला, एक साथ: कंकर...?!

मद्रासन:**(विंग्स से)** हाँ...कंकर!

(मद्रासन हँसते हुए मंच पर प्रवेश करती है। बुजु मद्रासन को दुलारते हुए उसके पास जाता है।)

बुजु: अल्ले-अल्ले...हमारी चोना-मोना उठ गई...मेरी बेब्बी! चलो अपने चेल्लमजी को एक हग्गी दो...!

(वह अपने दोनों हाथों को हवा में उठाता ही है, कि तभी मद्रासन उसे एक जोरदार तमाचा मारती है। बुजु भागकर गुल्ला के पीछे छिप जाता है।)

मद्रासन: **(गुस्से में)** अब अपना यह नाटक बंद करो बिहारी! मयने सब सुन लिया जी।

गुल्ला: **(बात को घुमाते हुए)** नाटक? नहीं-नहीं, नोतून बाउदी! हम और दादा बस आप दोनों के झगड़े वाले दिनों को याद करके खेल रहे थे।

मद्रासन: **(गरजते हुए)** चुप...! कहा ना कि मयने सब सुन लिया जी! तुम दोनों मेरे साथ यह प्यार का खेल रचकर...मेरे से मेरा पत्थर चुराने वाले थे जी? मई तुम दोनों की हिम्मत की दात देती! पर, यह तुम दोनों की बदकिस्मती जी, कि मयने तुम्हारा खेल पकड़ लिया। इसीलिए अब तुम दोनों मेरे सामने यह भोलेपन का नाटक बंद करो, वरना...मई तुम दोनों को गधा बनाकर सोसाइटी के गेट पर बाँध देगी।

बुजु: **(गुल्ला के कँधे के पीछे से अपना सिर निकालकर, नीचे स्वर में)** देखो मद्रासन, तुम यह अच्छा नहीं कर रही हो। अरे...आपसी झगड़े में यह जादू-वादू को क्यों लाना, बताओ?

मद्रासन: अय्यो...क्या हुआ बिहारी? आज तुम्हारी आवाज इतनी धीमी, और बात इतनी सभ्य कैसे निकल रही जी? आज अपने उदंड जवाब से मेरेको भला-बुरा नहीं कहोगे...मेरेको गालियाँ नहीं दोगे...या मेरी बॉडी-शेमिंग करके मेरे ऊपर हँसोगे नहीं जी?

बुजु: देखो मद्रासन, मैं मानता हूँ कि मैं थोड़ा मुँहफट हूँ। गुस्से में भला-बुरा निकल जाता है मेरे मुँह से। पर मद्रासन, मैं सिर्फ जवाब का तेज हूँ—दिल मेरा बहुत साफ

है। मैंने कभी तुम्हारा बुरा नहीं चाहा मद्रासन। और अगर मुझे मालूम होता कि तुम्हें मुझसे इतनी दिक्कत है...तो मैं बहुत पहले ही यह सोसाइटी छोड़कर यहाँ से चला जाता...

मद्रासन: **(उपहासपूर्ण हँसती हुई)** अय्यो...मयने तुमको जितना बड़ा फुद्दू समझा था, तुम तो उसे भी बड़े फुद्दू निकले बिहारी! देखो, कैसे तुम मेरे सामने अपने जीवन की भीख माँग रहे हो। खैर, तुमको यह सब बातें मेरे से यह प्यार का खेल खेलने से पहले कहना चाहिए था। तब शायद मई तुमको छोड़ भी देती— पर अब नहीं। तुमको क्या लगा? कि तुम यहाँ से चले जाओगे तो मई तुमको छोड़ देगी? **(खुन्नस में)** तुम दुनिया के किसी भी कोने में चले जाओ बिहारी...पर जब तक मई तुमको खून के आँसू नहीं रुलाएगी...तब तक मई तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी।

बुजु: **(भड़कते हुए गुल्ला के आगे आता है।)** अरे, जा-जा! तुम खुद को समझती क्या हो मद्रासन? जो तुम मुझे खून के आँसू रुलाओगी! अरे, मैंने ऐसा किया ही क्या है? जो तुम मुझे अपना जानी दुश्मन बना बैठी हो, हाँ? पहले तुम मेरे जात पर गई, मेरे खिलाफ झूठी शिकायत तुमने की, मेरी पुत्ती और गुल्ला पर काला जादू तुमने किया, और इन सब के बावजूद तुम मुझे लाल करोगी? **(ललकारते हुए)** अरे...अगर मर्द की बच्ची हो तो यह जादू-वादू को कोने में रख! और आकर मेरे साथ कुश्ती कर! मैं भी पहलवान का बेटा हूँ! दो मिनट में ही तुम्हें धूल ना चटाई...तो मैं एक बाप का नहीं!

मद्रासन: जितना उड़ना है उड़ लो, बिहारी...क्योंकि बहुत जल्द मई तुम्हारा सारा पर काटकर तुमको जमीन पर पटकने वाली।

बुजु: **(धमकाते हुए)** तुम ऐसे नहीं मानोगी। देख मद्रासन! सीधी तरह से वह पत्थर मेरे हवाले कर दो! नहीं तो मैं अभी थाना जाकर तुम्हारे खिलाफ FIR दर्ज कर दूँगा।

(मद्रासन जोर-जोर से हँसने लगती है। बुजु और गुल्ला डरकर एक-दूसरे से चिपक जाते हैं।)

गुल्ला: दादा...! मादाम के अंदर शक्चुन्नी आ गई दादा! कुछ कीजिए...

बुजु: **(डरते हुए)** ऐ...ऐ...मद्रासन! देखो! तुम्हें पता नहीं है...लेकिन, यह एक शैतानी पत्थर है! गुल्ला की दादी एक बहुत बड़ी डायन थी...उसी की बुरी आत्मा इस पत्थर के अंदर वास करती है! और जो कोई इस पत्थर को अपने पास रखता है...वह डायन उसे चुड़ैल बना देती है!

गुल्ला: हाँ मादाम...दादा एकदम सच कह रहे हैं! अरे मादाम...मेरी दादी तो इतनी बड़ी डायन थी...कि वह मेरे बाप को अपने पेट में ही खा गई थी।

(मद्रासन ठहाके मारती है। बुजु गुल्ला को गुस्से से देखता है। गुल्ला नजरें झुका लेता है।)

बुजु: देखो मद्रासन, मेरा यकीन करो। हम लोग तुम्हारे भले के लिए ही कह रहे हैं। इस पत्थर को त्याग दो, प्लीज!

मद्रासन: **(नाटकीय ढंग से)** अय्यो...ऐसा क्या जी? फिर तो मेरेको यह पत्थर तुमको दे देना चाहिए।

(वह अपनी कमर से एक दूसरे अभिन्न बैग को खींचकर दोनों की तरफ उठाती है, और फिर अपने गजरे की माला के साथ खेलती हुए धूर्त रूप से मुस्कुराती है।)

आओ, आकर ले लो।

बुजु: जा गुल्ला...जाकर बैग ले आ।

गुल्ला: **(डरते हुए)** नहीं दादा! हम नहीं जाएँगे! मादाम को देखकर लगता है कि अभी उन पर भरोसा नहीं किया जा सकत—क्या पता पिशाच की तरह मादाम हमारा ही खून चूस ले। हम नहीं जाएँगे दादा...

बुजु: अबे जाना...!

(वह गुल्ला को धक्का मारता है। गुल्ला डरते हुए मद्रासन के पास आता है और उसके हाथ से बैग लेकर वापस बुजु के पास लौट आता है। दोनों बैग को खोलते हैं।)

एक साथ: इसमें भी कंकर?!

गुल्ला: मतलब दादा? इतने दिनों से हम लोग एक कंकर चुराने की कोशिश कर रहे थे।

मद्रासन: **(हँसते हुए)** अय्यो...मेरेको तुम दोनों पर कितना तरस आता जी।

बुजु: **(भड़ककर)** तुम ऐसे नहीं मानोगी मद्रासन। मैं अभी जाता हूँ और पुलिस को लेकर आता हूँ!

(बुजु विंग्स की तरफ तेज़ी से बढ़ता है, और जैसे ही मद्रासन को पार करता है, मद्रासन पीछे से बुजु के हाथ को पकड़कर उसे जोर से मरोड़ देती है। बुजु दर्द में चीखता है। गुल्ला अपना कान पकड़कर उठक-बैठक करने लग जाता है।)

मद्रासन: **(क्रोध में)** अय्यो, बिहारी...मेरेको अब तुमसे निपटने के लिए कोई जादू करने की जरूरत नहीं जी। क्योंकि मेरे साथ प्यार का नाटक करके, तुमने खुद के और अपने नौकर के पैर पर खुद कुल्हाड़ी मार दी जी। इसीलिए तुम दोनों मेरी एक बात कान खोलकर सुन लो! अगर तुम दोनों ने यह पत्थर वाली बात किसी से कही...या पुलिस के पास गए...तो मई सबसे पहले यह बयान देगी, कि कैसे तुमने मेरेको पहले अपने झूठे प्यार में फँसाया...और फिर तुमने और तुम्हारे नौकर ने मेरा शोषण किया। उसके बाद...मई तुम दोनों पर: 354A, 120B, 498A और 420 का केस थोककर, तुम दोनों को पूरी जिंदगी जेल में सड़ाएगी।

(वह बुजु के हाथ को और जोर से कसती है।)

और एक बात, बिहारी...अगर तुम या तुम्हारा नौकर मेरे घर से बाहर कदम भी रखता, तो मई सीधा तुम्हारी बीवी को फोन करेगी और उसे बताएगी, कि कैसे उसका कानवन तीन रातों से मेरे साथ गुल खिला रहा जी।

(वह बुजु को दूर फेंकती है। गुल्ला बुजु को संभालता है।)

गुल्ला: मादाम आप यह ठीक नहीं कर रही हैं!
मद्रासन: चुप! साला दो कोड़ी का नौकर। कान खोलकर सुन लो! मई बाहर जा रही—थोड़ी ठंडी हवा खाने। मेरे वापस आने तक पूरे घर की साफ-सफाई, झाड़ू-पोछा सब हो जाना चाहिए! वरना...मई तुमको मुर्गा बनाकर सोसाइटी के कुत्तों को खिला देगी!

(गुल्ला अपना सिर हिलाता है। मद्रासन प्रस्थान करती है। दरवाजा बंद होने के बाद गुल्ला मंच पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगता है।)

बुजु: **(गुस्से से फूलते हुए)** साली डायन! मैं इस मद्रासन को छोड़ूँगा नहीं! इसके लाश पर तांडव नहीं किया ना...तो साला मेरा नाम भी बृजेश नहीं!

गुल्ला: अरे दादा...अब आप फैंटसी में ट्रेजडी मत घुसाइए! वैसे ही रियलिटी की माँ-बहन हुई पड़ी हैं!

बुजु: अरे गुल्ला...तू चिंता मत कर! अब मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। अब जब तक मैं इस मद्रासन का घमंड चूर-चूर नहीं कर देता...तब तक मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा। अब बस तू देखता जा इस बिहारी का कमाल!

गुल्ला: **(चिढ़कर)** अरे हट तेरे बिहारी का कमाल!

(बुजु गुल्ला को गुस्से से घूरता है। गुल्ला भिनभिनाने लगता है।)

अ...ब...दा...दादा, मेरा मतलब है कि...तो कमाल दिखाइए ना! कब दिखाएँगे आप अपना कमाल? अब तो बात सिर्फ आपकी नहीं रही, अब तो हम भी इन सब में शामिल हो गए हैं! और दादा...अगर मादाम को अभी नहीं रोका गया...तो

कल को वह पूरी सोसाइटी पर जादू करेगी...फिर शहर पर—फिर देश पर—फिर धरती पर—और फिर पूरे ब्रह्मांड पर...! दादा! मादाम अब कोई साधारण विलन नहीं रही...वह अब एक सुपर-विलन बन चुकी हैं! मादाम अब सब कुछ बर्बाद कर सकती हैं दादा! इसलिए इस सुपर-विलन को हराने के लिए, अब आपको सुपर-हीरो बनना ही होगा! यह समझिए कि अब पूरे ब्रह्मांड को बचाने का भार आपके कँधे पर है। कुछ कीजिए दादा...और हम सबको बचाइए!

बुजु: **(काल्पनिक होकर)** हाँ...! हाँ...! मैं ब्रह्माण्ड को बचाऊँगा! मैं ब्रह्माण्ड को बचाऊँगा! तुम्हे पता है गुल्ला? बचपन से मुझे सिनेमा वाला 'मकड़ी-मेन' के जैसा सुपरहीरो बनने का बहुत शौक था।

गुल्ला: तो बस दादा! आज से, नहीं—नहीं! बल्कि अभी से ही आप खुद को 'मकड़ी-मन' समझिए और मादाम को 'ग्रीन-गोभी'—और बस टूट पड़िए दादा...बन जाइए इस दुनिया का मसीहा!

बुजु: **(उत्तेजना से)** हाँ...! हाँ...! मैं मसीहा बनूँगा! मैं मसीहा बनूँगा! **(मायूस होते हुए)** ...पर मैं मसीहा कैसे बनूँगा गुल्ला? मेरे पास तो कोई सुपरपावर नहीं है जिससे मैं उस पत्थर के जादू को मात दे सकूँ?

गुल्ला: मर्दों के पास हमेशा एक सुपरपावर होता है दादा...और वह है उनकी मर्दानगी। वह दिखाइए ना...

बुजु: पर कैसे?

गुल्ला: अरे दादा...आपको कुश्ती आती है न?

बुजु: हाँ।

गुल्ला: तो बस! आप अपना हाथ-पैर अंधाधुंध चलाते हुए मादाम के हाथ-पैर को तोड़ दीजिए। और फिर पत्थर लेकर 'मकड़ी- मन' की तरह इधर-उधर कूद-फांद करते हुए थाना पहुँच जाइए।

बुजु: हाँ, यह अच्छा प्लान है! पर गुल्ला?

(अपनी तोंद को सहलाते हुए।)

तुम्हें नहीं लगता है कि मुझे थोड़ी प्रैक्टिस कर लेनी चाहिए?

गुल्ला: **(निराश होते हुए)** चलो दादा थोड़ा प्रैक्टिस कर लेते हैं।

(गुल्ला बुजु को दंड-बैठक करवाता है, फिर उसके साथ बॉक्सिंग करता है, उसके बाद वह बुजु को 'मकड़ी-मैन' की तरह पूरे घर में कूद-फांद करवाता है, जिससे पूरा घर बिखर जाता है। अंत में दोनों थककर सोफे पर बैठ जाते हैं।)

बुजु: (हाँफते हुए) हु ऍम आई...?

(इसके साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्य — १० ~

(कुछ क्षण बाद, 'क्या से क्या हो गया...' गाने के साथ मंच फिर से प्रकाशित होता है। पीछे स्पीकर बज रहा है। बुजु और गुल्ला मंच पर झाड़ू-पोछा कर रहे हैं। गुल्ला जोर-जोर से हँसने लगता है।)

बुजु: हँस क्यों रहा है?

गुल्ला: दादा....यह गाना आप पर कितना जच रहा है। हमने जीवन में पहली बार किसी मालिक को नौकर बनते देखा है।

बुजु: **(गुस्से में गुल्ला को झाड़ू से मारते हुए)** साला! नमकहराम! एक तो मैं तेरी मदत कर रहा हूँ...और उल्टा तुम मुझे नौकर कह रहा है!

गुल्ला: अरे दादा...माफ कर दीजिए...हम बस मस्ती कर रहे थे!

बुजु: **(झाड़ू को रोकता है। परेशान होकर)** अरे गुल्ला...यह मस्ती करने का समय नहीं है! सोच कि मद्रासन वह पत्थर कहाँ छुपा सकती है? उसके आने से पहले हमें वह पत्थर ढूँढ़ना ही होगा।

गुल्ला: हम दोनों ने पूरे घर को तीन बार जाँच लिया है दादा। हम कह रहे हैं...पत्थर घर में नहीं है।

बुजु: अरे तो क्या वह डायन निगल गई पत्थर को? देख गुल्ला! मेरा मन कह रहा है कि पत्थर यहीं कहीं घर के अंदर ही है! एक बार फिर से ढूँढ़ते हैं...

गुल्ला: **(गिड़गिड़ाते हुए)** नहीं दादा, प्लीज! भगवान के लिए हम पर थोड़ी दया कीजिए। अगर मादाम के आने से पहले हमने यह साफ-सफाई नहीं की...तो मादाम मेरा नामो-निशान कुत्ते के पिछवाड़े से निकाल देगी। हम पत्थर बाद में ढूँढ़ लेंगे।

बुजु: इतना समय नहीं है गुल्ला!

(वह वापस झाड़ू मारने लगता है। गुल्ला भी खामोश होकर झूमते हुए पोछा लगाता है। थोड़ी देर बाद।)

अरे तुम्हें कुछ तो पता होगा इस पत्थर के बारे में? जिससे यह पापी पत्थर खुद चकनाचूर हो जाए?

(गुल्ला अपना सिर 'ना' में हिलाता है। बुजु फिर झाड़ू मारने लगता है, अगले क्षण, खिजलाकर।)

अरे पर तुमने यह पत्थर चुराया कहाँ से था? शायद जिसका यह पापी पत्थर है! वह जानता हो इस पत्थर से निपटने का कोई तरीका।

(गुल्ला आश्चर्यचकित होकर एकदम से रुकता है, उठकर स्पीकर ऑफ करता है, और बुजु के पास आता है।)

गुल्ला: **(भौहें सिकुड़ते हुए)** अरे दादा...यह बात तो हमारे दिमाग से ही निकल गई थी, कि यह पत्थर तो हमने चुराया है! जरूर वह इस पत्थर का राज जानता होगा।

बुजु: पर तुमने यह पत्थर चुराया कहाँ से था?

गुल्ला: आप यकीन नहीं करेंगे दादा, यह पत्थर हमने चिनामा के कमरे से चुराया था।

बुजु: क्या? पर ऐसा जादुई पत्थर चिनामा के पास कैसे आया?

गुल्ला: हमको नहीं पता दादा। दरअसल, एक दिन हमने चिनामा को अपने बिस्तर के नीचे, एक लोहे के बक्से में कुछ पैसे रखते हुए देखा लिया था। फिर एक दिन मौका पाकर हम उसके कमरे में घुस गए...और बक्सा खोलकर हमने सात हजार में से दो हजार रुपए चुरा लिया। लेकिन तभी दादा, हमारी नजर एक लाल कपड़े में बंधे एक और छोटे बक्से पर गई, और जब हमने उस बक्से को

खोला, तो उसके अंदर सिर्फ यह पत्थर था। हमको लगा कि शायद चिनामा ने भी इस पत्थर को कहीं और से चुराया होगा, इसलिए हमने पत्थर को भी चुरा लिया।

बुजु: हम्म्म...तो फिर चिनामा से पूछना होगा कि उसे यह पत्थर कहाँ से मिला? चलो चिनामा के पास।

गुल्ला: पर दादा, कैसे जाएँगे? अगर मादाम जान गई कि हम दोनों ने घर से बाहर कदम रखा था तो आपकी शामत आ जाएगी। हमें चिनामा को ऊपर बुलाना होगा।

बुजु: पर चिनामा को ऊपर कैसे बुलाएँगे गुल्ला? डायन हम दोनों का फोन भी अपने साथ ले गई है!

गुल्ला: अरे दादा! अगर मादाम सुपर-विलन हैं...और आप सुपर-हीरो! तो हम भी हार के जीतने वाला बाजीगर हैं!

(गुल्ला अपनी चड्डी के अंदर से एक छोटा फोन निकालता है और चिनामा को कॉल करता है।)

यह हमारा आपातकालीन फोन है दादा—हेलो चिनामा। हम गुल्ला। फौरन ऊपर आओ। टाटा।

(गुल्ला फोन काटकर वापस अपनी चड्डी के अंदर रख लेता है। दोनों फिर तेज़ी से घर की सफाई करने लगते हैं। दरवाजे पर दस्तक होती है। दोनों सभी प्रॉप्स को विंग्स के अंदर रखते हैं। बुजु सोफे के पास आकर खड़ा हो जाता है। गुल्ला दरवाजा खोलता है। चिनामा का प्रवेश।)

चिनामा: **(बुजु के पास आते हुए)** आपने बुलाया, साबजी?

(गुल्ला झट से दरवाजा लॉक करता है और दोनों के पास आकर खड़ा हो जाता है।)

बुजु: चिनामा यह बताओ कि तुम्हें वह पत्थर कहाँ से मिला था?

चिनामा: पत्थर? अच्छा, आप 'विष-मणि' की बात कर रहे हैं साबजी?

बुजु और गुल्ला, एक साथ: विष-मणि...?!

चिनामा: वही न साबजी? जो मन की इच्छा को सच कर देती है। और फिलहाल कमला मैडमजी के पास है।

बुजु: तुम उस पत्थर के बारे में जानते थे?

चिनामा: लो साबजी, अब मणि मेरी है, तो मुझे नहीं, तो और किसे पता होगा।

गुल्ला: चल झूठा! दादा, यह एकदम झूठ बोल रहा है! अगर यह पापी पत्थर इसका होता...तो यह यहाँ पर ऐसे पंद्रह हजार की नौकरी कर रहा होता—महलों में नहीं रह रहा होता? सच-सच बताओ चिनामा? तुमने ये पत्थर कहाँ से चुराया?

चिनामा: मैं तुम्हारी तरह गरीब जरूर हूँ, गुल्ला, पर चोर नहीं। यह मणि मेरी ही है; जिसे मेरे पूर्वज पिछले नौ सौ साल से पीढ़ी दर पीढ़ी सँभालते आ रहे हैं।

गुल्ला: चल हट! विष-मणि? नौ सौ साल पुराना? तुम्हें क्या हम दोनों गधे दिख रहे हैं? जो तुम्हारी इस झूठी कहानी को सच मानेंगे!

चिनामा: तुम्हारे मानने या न मानने से इतिहास नहीं बदलेगा गुल्ला। माफ कीजिए, साबजी, पर आप दोनों पहले यह निर्णय कर लीजिए, कि आपको मणि के बारे में जानना है, या मेरी कहानी को आंकना है।

(चिनामा जाने लगता है।)

बुजु: रुको चिनामा! मुझे मणि के बारे में जानना है।

गुल्ला: पर दादा...!

बुजु: चुप हो जाओ, गुल्ला! तुम बताओ अपनी कहानी चिनामा।

(तीनों मंच के बीच बैठते हैं।)

चिनामा: यह नौ सौ साल पहले की बात है, साबजी, जब मेरे पर-पर-पर-पर-पर...दादा मणिपुर के राजा थे। मेरे दादा एक बहुत बड़े शिव भक्त थे, साबजी। और एक रात, दादा के सपने में भगवान शंकर आए, और उन्हें एक नाग की सेवा करने का आदेश दिए। जब मेरे दादा नींद से जागे, तो उन्होंने देखा कि उनके नाभि के पास, एक छोटा सा काला नाग 'ढाई कुंडलिया' मारे सो रहा था। उसके बाद मेरे दादा ने अपना सारा राज-पाठ अपने बड़े बेटे को सौंप दिया, और दिन-रात बस उस नाग की सेवा करने लगे। पता है साबजी? उन्होंने सौ साल तक उस नाग की सेवा की थी। और फिर, एक दिन अचानक बिना किसी कारण के वह नाग मर गया। और मरने के बाद उस नाग ने अपने मुँह से इस मणि को उगला था।

गुल्ला: हाँ दादा! हमारे गाँव के बड़े-बुजुर्ग भी कहा करते थे! कि जब कोई साँप सौ साल तक अपने जहर को नष्ट न करके अपने दिमाग में जमा लेता है न...तो फिर उस साँप का दिमाग मणि में बदल जाता है—ठीक वैसे ही जैसे 'कोयला हीरा में बदल जाता है!' और फिर जिसे वह साँप मारने के बाद अपने मुँह से उगल देता है।

चिनामा: एकदम सही कहा तुमने गुल्ला।

बुजु: तो इसका मतलब वह पत्थर असल में एक 'नागमणि' है?

चिनामा: हाँ, साबजी।

बुजु: वाह...नागमणि की बातें मैंने सिर्फ किस्से-कहानियों में ही सुनी थीं। पर हकीकत में एक से पाला पड़ेगा, यह कभी सोचा नहीं था। **(उत्सुकता से)** आगे क्या हुआ चिनामा? मणि मिलने के बाद तुम्हारे दादा ने फिर क्या किया?

चिनामा: मेरे दादा के पास जब नाग के मरने की खबर पहुँची, तो यह सुनकर वह भी चल बसे, साबजी। और फिर मणि राजा को मिल गई। उस समय राज्य के पुरोहित ने राजा को इस मणि से खतरे का आगाह किया था। उन्होंने ही कहा था, 'कि यह विष-मणि है—अनंत शक्तिशाली! जो अपने मालिक के मन की हर

इच्छा को पूरी करने की ताकत रखती है। पर, भले ही यह मणि वरदानदारी हो, परन्तु बनी तो यह विष से ही है। इसीलिए यह मणि अपने मालिक को वरदान के साथ शाप भी प्रदान करेगी।', और फिर उन्होंने तुरंत ही इस मणि को गंगा में विसर्जित करने का सुझाव दिया था। पर राजा नहीं माना, साबजी, उन्होंने इस मणि का उपयोग किया, जिसके कारण कुछ ही इच्छाओं के बाद राजा की मृत्यु हो गई। उसके बाद दूसरा राजा बना, और मणि उसे मिल गई, उसने भी अपनी इच्छाएँ पूरी कीं, जिसके कारण उसकी भी समय से पहले मृत्यु हो गई। इसके बाद हमारे परिवार के जिन-जिन लोगों ने भी इस मणि का दुरुपयोग किया, वे भली जवानी में ही चल बसे, साबजी। और फिर अंत में राज्य सँभालने के लिए कोई नहीं बचा था, जिसके कारण हमारा सारा राज्य भी हाथ से निकल गया। बस जो बचा-कुचा परिवार था, वह पहाड़ों में जाकर बस गए। और फिर वहाँ, गहरी ध्यान में जाकर, उन्होंने इस मणि के बारे में जाना और समझा।

बुजु: उन्हें क्या मिला चिनामा?

चिनामा: पुरोहित की बात सच थी साबजी। यह मणि 'अमृत और विष' दोनों धातुओं को धारण किए हुए है। यह मणि अपने मालिक की हर इच्छा पूरी करने के बाद उसकी जीवनरेखा से दस वर्ष की आयु चुरा लेती है। इसीलिए इस मणि को धारण करने वाला व्यक्ति, कुछ ही इच्छाएँ पूरी करने के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

बुजु और गुल्ला एक साथ, हैरान होकर: क्या...?!

चिनामा: हाँ, साबजी।

गुल्ला: तो फिर चिनामा? ऐसी पापी मणि को तुमने अपने पास रखा ही क्यों है? इसे तोड़ क्यों नहीं देते?

चिनामा: मेरे पूर्वजों ने कई तरीकों से इस मणि को नष्ट करने की कोशिश की थी, गुल्ला, लेकिन इस मणि पर एक खरोंच तक नहीं आई।

गुल्ला: तो फिर इसे गंगा में फेंक दो।

चिनामा: और अगर यह मणि किसी और के हाथ लग गई तो? और उसने इस मणि का उपयोग किया तो? वह तो इस मणि के बारे में नहीं जानता होगा, और बेकार में अपनी जान गंवा बैठेगा। एहि वजह थी, साबजी, कि मेरे पूर्वजों ने इस मणि को दुनिया से गुप्त और सुरक्षित रखने की कसम खाई थी। और अब केवल मैं ही अपने परिवार का आखिरी वंश बचा हूँ, इसीलिए मणि को यहाँ अपने साथ रखा था।

बुजु: **(घबड़ाकर मंच से उठते हुए)** एक मिनट! अगर यह मणि उम्र खाती है! तो इसका मतलब है कि मद्रासन की जान खतरे में है!

(चिनामा अपनी नजरें झुका लेता है।)

गुल्ला: **(रोते हुए)** आखिर ट्रेजडी घुस ही गई...! लो! करना था ना मौत का तांडव! अब नाचना मादाम की लाश के ऊपर। हे भगवान...!

(वह खुद को मारने लगता है।)

यह सब फसाद की जड़ हम हैं! ना हम यह मणि चुराते...और ना हम लोग इस मुसीबत में फँसते! हमने यह मणि क्यों चुराया, क्यों...? क्यों...?

(वह थककर रुक जाता है और फिर डरते हुए बुजु के करीब आता है।)

...हम तो कहते हैं दादा, कि यह सब बातें छोड़िए, और अब यह सोचिए...कि अगर मादाम मर गई तो उनकी लाश के साथ हम लोग क्या करेंगे; जलाएँगे—दफ़नाएँगे—छुपाएँगे...

बुजु: चुप कर गुल्ला! क्या बेकार की बात कर रहा है! **(चिनामा से)** चिनामा तुम्हें कब पता चला कि तुम्हारी मणि मद्रासन के पास है?

चिनामा: मुझे शक तब हुआ, साबजी, जब मैंने गुल्ला को भूत की तरह चिल्लाते हुए सुना। मैं तुरंत अपने कमरे में गया। और जब बक्सा खोला, तो पाया कि मणि

बक्से में नहीं थी। फिर सुबह जब गुल्ला मैडमजी की तरफ होकर आपके खिलाफ बयान दिया, तब मुझे मैडमजी पर शक हुआ, और फिर थोड़ा छानबीन करने के बाद, मेरा शक यकीन में बदल गया साबजी। एहि खातिर मैंने आपको बचाया भी था।

बुजु: **(उत्तेजित होकर)** तो फिर चिनामा? तुमने मद्रासन को आगाह क्यों नहीं किया कि उसकी जान खतरे में है?

चिनामा: मैंने कोशिश की थी, साबजी, पर मैडमजी नहीं मानी।

बुजु: अरे साबुन, टिक्की बेच रहे हो क्या? जो कह रहे हो कि मैडमजी नहीं मानी! किसी की जान दाँव पर लगी है और हम लोग यहाँ बैठकर आराम से बातें कर रहे हैं।

चिनामा: माफ कीजिएगा, साबजी, पर सच कहूँ तो मुझे फर्क नहीं पड़ता।

बुजु: अरे तुम्हारे कलेजे के पीछे दिल है या नहीं? जो किसी की मौत की चाहत रखे हो?

चिनामा: मेरे चाहने या न चाहने से क्या फर्क पड़ता है, साबजी, मैं तो केवल एक दरवान हूँ। यह मुसीबत मैडमजी ने खुद अपने सिर पर उठाई है; मेरा इसमें कोई दोष नहीं है साबजी। और वैसे भी, मैडमजी किसी की नहीं सुनतीं; भलाई की बात भी उन्हें अपनी तरफ तलवार का वार लगती है। ऐसे में आप ही बताइए, साबजी, उन्हें मैं कैसे रोकूँ? पता है साबजी? शुरुआत में मुझे भी बहुत बुरा लगा था, जब मैंने यह जाना था कि मैडमजी ने कई बार इस मणि का उपयोग कर चुकी हैं, और अब उनकी जान खतरे में है। लेकिन साबजी, आप मुझे एक बात बताइए? क्या मैडमजी जैसी हिंसक, दुर्व्यवहारी और क्रोधी व्यक्ति मानवता के दुश्मन नहीं हैं? क्या ऐसा व्यक्ति मानव जाति के भविष्य को अँधेरे में नहीं ढकेल रहा है? मैंने अपने जीवन के तीस साल गेट पर बैठे-बैठे बिताए हैं, साबजी, लाखों लोगों को मैंने बेहद नजदीक से जाना है—कुछ अच्छे मिले, तो बहुत बुरे मिले, पर कुछ

ऐसे भी मिले, साबजी, जो न ही अच्छे थे और न ही बुरे; बल्कि बत्तर थे। ऐसे व्यक्ति कर्महीन होते हैं, साबजी। यह न तो संसार के हित के प्रति कोई कर्म निभाता है, और न ही अपने परिवार के प्रति। यह अपनी पूरी जीवन बस 'मैं' में बिता देते हैं। इनकी खुद की कोई मंजिल नहीं होती, यह बस समाज के बीच रहकर दूसरों को नीचे खींचते रहते हैं। और मैडमजी मेरे इसी बत्तर वाली लिस्ट में आती हैं। आपको पता है, साबजी? इस सोसाइटी में ३१२ बच्चे रहते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि यह सब निंदाजनक माहौल उनकी बढ़ती मानसिकता को कितना नुकसान पहुँचाता होगा? क्या भविष्य में ये बच्चे भी जानवरों की तरह बस एक-दूसरे से लड़ते रहेंगे? ...माफ कीजिएगा, साबजी, पर ऐसे व्यक्ति को मैं धरती का बोझ मानता हूँ। और मेरा मानना है, साबजी, की बोझ को जितना जल्दी हो सके हल्का कर देना चाहिए, नहीं तो एक दिन हमारा भविष्य इसी बोझ के नीचे दबकर मर जाएगा। बोलिए, साबजी, क्या मैं गलत कह रहा हूँ?

बुजु: देखो, चिनामा! तुमने जो भी कहा वह सब सही है। लेकिन तुम मुझे एक बात बताओ? क्या सिर्फ मद्रासन के मरने पर मानवता का विकास हो जाएगा? अरे मद्रासन जैसे लाखों लोग इसी समाज में फैले हुए हैं! तुम कितनों की मौत की चाहत अपने दिल में रखोगे? ...और तुम इन अज्ञ लोगों को दोषी क्यों मानते हो? अगर दोषी मानना ही है, तो इस बल से दबाने वाले कानून को मानो, समाज की इस झूठी नैतिकता को मानो, इस जातिवाद को मानो जो मानव को मानवता से दूर ले जा रही है। इन सब में तुम्हारी इस 'बत्तर वाली लिस्ट' का क्या कसूर, बोलो? अरे ये लोग भी तो समाज के इस उग्र जाल में फँसे हुए हैं; जिसमें मैं, तुम, गुल्ला, मद्रासन—हम सब जकड़े हुए हैं! तो फिर इन्हें इनकी कर्मों की सजा देने वाले हम कौन होते हैं, बोलो? ...और वैसे भी! मेरा मानना है कि, 'मृत्युदंड देने का काम सिर्फ भोले बाबा का है! और मानव को उन्होंने सिर्फ जीवनदान देने के लिए बनाया है।' इसलिए मुझसे यह पाप नहीं होगा। मैं मद्रासन को रोकूँगा कि वह अब और कोई इच्छा न मांगे।

गुल्ला: हम भी दादा के साथ हैं! हमको भी मादाम की जान बचानी है। ...मादाम हमारे वजह से इस मुसीबत में पड़ी है, इसलिए अब हमारा फर्ज बनता है कि हम उनकी जान बचाएँ।

चिनामा: मैडमजी ने आप दोनों के साथ इतना बुरा किया, फिर भी आप दोनों उन्हें बचाना चाहते हैं?

बुजु: इंसान बुरा नहीं होता चिनामा...'बस जीवन ही इतना खूबसूरत है कि इंसान इसे जीने के लिए बुरा तक बन जाता है!' और क्या पता अगर हम लोग मद्रासन को बचा लें तो उसकी आँखें खुल जाएँ...और फिर वह प्यार और अपनापन को थोड़ा समझ पाए।

गुल्ला: पर दादा, हम लोग मादाम को कैसे मनाएँगे कि वह और कोई इच्छा न माँगे?

बुजु: **(अपने हाथों को नचाते हुए)** क्या तुम मधुमक्खियों को मना सकते हो कि वे डंक न मारें?! क्या तुम पेड़ को मना सकते हो कि वह पतझड़ रोक दे...?!

गुल्ला: **(अस्पष्टतः)** अरे दादा? यह क्या कर रहे हैं? पेड़—मधुमक्खियाँ? हमारे कुछ पल्ले नहीं पड़ा?

बुजु: अरे गुल्ला...मेरे कहने का मतलब है कि, मद्रासन हमारी बात कभी नहीं मानेगी। इसलिए हमें अपने प्लान पर ही कायम रहकर, किसी भी तरह से उस मणि को हासिल करनी होगी। और चिनामा अब तुम्हें भी हम दोनों का साथ देना होगा।

चिनामा: आपकी जैसी इच्छा, साबजी।

गुल्ला: पर दादा...हम लोग उस मणि को कैसे चुराएँगे ?

बुजु: अरे गुल्ला...तु चिंता मत कर! अब तक लड़ाई 'आन की बाजी' की थी, पर अब लड़ाई 'जान की बाजी' की है! अब बस देखता जा इस बिहारी का, 'द ग्रेट प्लान!' वहाँ मैंने मद्रासन पर जाल फेंका, और यहाँ मणि मेरे हाथ में!

गुल्ला: **(उत्सुकता से)** दादा, कुछ तो बताइए? थोड़ा तो सस्पेंस दूर कीजिए?

(बुजु इशारे से दोनों को अपने पास बुलाता है, और फिर उनके कानों में फुसफुसाने लगता है। इसी के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

~ दृश्य — ११ ~

(मंच प्रकाशित होता है। मंच के पीछे रस्सी से बना एक बड़ा मकड़ी का जाला टंगा हुआ है। बुजु, एक लाल पोशाक में खुद को पूरी तरह ढका हुआ, उस जाले पर लटका है। गुल्ला और चिनामा विंग्स के पीछे छिपकर देख रहे हैं। गुल्ला के हाथ में एक स्पीकर है, जिसे वह बुजु के इशारे पर ऑन कर देता है—ऊर्जावान धुन जोर से बज उठती है। चिनामा घर की सभी लाइटों को जलाने-बुझाने लगता है। मद्रासन घबराते हुए मंच पर प्रवेश करती है।)

मद्रासन: अय्यो...! यह सब क्या हो रहा जी? यह कैसी अनहोनी! रक्षा करो देवी अम्मा! रक्षा करो...

(उसकी नजर बुजु पर जाती है। चीखते हुए।)

अय्यो...! मेरे घर में एलियन ने हमला किया जी! मेरेको बचाओ...बचाओ...!

(वह इधर-उधर भागने लगती है और आस-पास की चीजें उठाकर बुजु पर फेंकती है। बुजु झट से मंच पर उतरता है और मद्रासन के करीब आता है।)

बुजु: **(भरी आवाज में)** अरे शांत हो जाइए, आंटी! मुझसे डरिए मत—मैं तो आपका दोस्त और पड़ोसी—'मकड़ी-मेन' हूँ!

मद्रासन: **(एक गोल घड़ी को हवा में रोकते हुए, जिज्ञासापूर्ण)** मकड़ी-मैन...?

बुजु: हाँ, आंटी! मैं क्वीन से मिलने आया हूँ।

मद्रासन: **(खुश होकर)** अय्यो...तुमने मेरेको क्वीन कहा जी!

बुजु: नहीं—नहीं, आंटी! मेरा मतलब है कि, मैं क्वीन से आया हूँ! क्वीन? अमरिका? लॉस एंजेलिना जोली?

(मद्रासन संभ्रमित होकर अपना सिर हिलाती है।)

हाँ...तो मैं वहाँ से आया हूँ! मैंने आपको क्वीन नहीं कहा, आंटी! अरे...आप तो किसी राज्य की रानी की दासी की दासी लग रही हैं।

मद्रासन: **(गुस्से में)** अय्यो, क्या कहा जी?

बुजु: अरे गुस्सा क्यों होती हो, आंटी? सभी जानते हैं, कि मुझे बकैती करने की आदत है। आप मेरी फैन नहीं हैं क्या?

मद्रासन: नहीं...! मई मउत की देवी की फैन है! मई बुलाती उसको...

बुजु: **(धीमी स्वर में)** रहने दीजिए...आप काफी हैं।

मद्रासन: ...तुम अपना काम बताओ कि तुम यहाँ मेरे घर में क्यों आया जी? और फिर, अपना जाला समेटकर चलते बनो मेरे घर से!

बुजु: (गला साफ करते हुए) अह्ह्म्म...बात दरअसल यह है, आंटी! कि यहाँ एक विलन आने वाला है!

मद्रासन: अय्यो...!

बुजु: इस विलन को कुछ जादुई मणि चाहिए। बाकी मणियाँ तो उसने हासिल कर लीं हैं...और अब बस एक आखिरी मणि बची है—जो इस समय आपके पास है! और जिसे लेने के लिए वह विलन यहाँ आपके घर आ रहा है। इसलिए मैं आपको बचाने आया हूँ, आंटी! आप जल्दी से वह मणि मुझे दे दीजिए...ताकि मैं आपके ऊपर से इस मुसीबत को झुलाते हुए ले जाऊँ।

मद्रासन: **(संभ्रमित होकर)** अय्यो, मेरेको यह कहानी कुछ देखी-दिखाई लगती जी? कहीं यह तुम्हारा एक विलन, वह 'तकला-बैंगन' तो नहीं जी?

बुजु: **(घबराते हुए)** अ...उम...हाँ, नहीं, मेरा मतलब है कि...इस बार उसने एक भयानक दैत्य में पुनर्जन्म ले लिया है, आंटी! और अगर उसे आपकी मणि मिल गई...तो वह इतना ताकतवर हो जाएगा! कि अपनी एक डकार से इस पूरी दुनिया का सर्वनाश कर देगा! अब आप ही बताइए, आंटी? क्या हम हीरोज किसी का डकार रोक सकते हैं?

मद्रासन: **(शंकित होकर)** पर तुमको कैसे पता चला कि मणि मेरे पास जी? हम्म!

बुजु: **(बात को बनाते हुए। खुफिया स्वर में)** वो...वो...हाँ! आपको एक अंदर की बात बताऊँ, आंटी! उस दैत्य से लड़ने के लिए भोले बाबा को भी बुलाया जा रहा है...! एक दूसरे ब्रह्मांड में महायज्ञ चल रहा है...! उसी यज्ञ के दौरान भोले बाबा स्वयं प्रकट हुए...और आदेश दिए कि यह मणि फौरन आपसे लेकर गंगा में बहा दी जाए। बाकी सभी हीरो उसी यज्ञ में व्यस्त हैं, इसलिए मणि लाने के लिए मुझे भेजा है।

(मद्रासन कुछ सोचने लगती है। गुल्ला और चिनामा विंग्स के पीछे से झाँकते हैं और बुजु को मणि लेकर वापस आने का इशारा करते हैं।)

मद्रासन: अय्यो, मेरेको एक बात बताओ? क्या सभी हीरो असली जी?

बुजु: हाँ, आंटी! हम सब असली हैं—आपकी कसम! तभी तो हमारे ऊपर सिनेमा बना है! ताकि यह महान कल्पनाएँ दर्शक कभी भूलें नहीं।

(मद्रासन फिर कुछ सोचते हुए इधर-उधर हिलती है। दोनों वापस विंग्स के पीछे छिप जाते हैं।)

बुजु: अरे, आंटी! अब किस सोच में पड़ गई? जल्दी कीजिए और वह मणि मुझे दे दीजिए...मेरे पास ज्यादा समय नहीं है।

मद्रासन: अय्यो, मेरेको एक और बात बताओ जी?

बुजु: **(चिढ़कर)** अब क्या है, आंटी?

मद्रासन: यह तुम्हारा दैत्य पिछली बार यहाँ कब आया था जी?

बुजु: **(घबराते हुए)** वो...वो...करीब नौ सौ साल पहले वह तकला यहाँ आया था। तब मैंने उसे धूल चटाई थी!

मद्रासन: अय्यो...तो इसका मतलब? तुम्हारी उम्र नौ सौ साल जी?

बुजु: अ...उम...हाँ।

मद्रासन: **(गुस्से में)** तो तुम, साला! नौ सौ साल का बूढ़ा होकर मेरेको आंटी बोल रहे हो?!

(चिनामा और गुल्ला वापस विंग्स से निकलकर बुजु को मणि लेने का इशारा करते हैं।)

बुजु: **(अपने हाथों को जोड़ते हुए)** अरे माफ कर दो, बेटी! मैं भीख माँगता हूँ...कि मणि मुझे दे दो! वरना अगर वह तकला यहाँ आ गया तो हम दोनों को कुत्ते की मौत मरेगा।

मद्रासन: **(डरने का नाटक करते हुए)** अय्यो...ऐसा क्या जी? तब तो मेरेको यह पत्थर तुमको फौरन दे देना चाहिए।

(वह बैग को अपनी कमर से खींचती है और बुजु को देती है।)

यह लो जी।

(बुजु बैग को लेकर मुड़ता ही है, कि तभी वह पीछे से बुजु का गला पकड़ लेती है।)

अय्यो! यह कलयुग जी! यहाँ पार्सल मिलने पर हमेशा उसे खोलकर चेक करने का।

बुजु: ओह! हाँ...

(वह बैग को खोलता है।)

कंकर...!

मद्रासन: **(हँसते हुए)** हाँ बिहारी...कंकर!

(वह बुजु के चेहरे से मुखौटा हटाती है।)

बुजु: अरे, तुमने तो मुझे पहचान लिया?

मद्रासन: हाँ, बिहारी...! मई तो शुरुआत में ही समझ गई थी, कि अंग्रेजी लोमड़ी की खाल के पीछे, बिहारी बकरा जी! मई तो बस सुबह से बहुत बोर हो रही थी, इसीलिए सोचा कि तुम्हारे इस नाटक से ही मई थोड़ा टाइम-पास कर लेती जी। पर तुमको क्या लगा बिहारी? कि तुम यह सब नौटंकी करके...मेरे से मेरा पत्थर छीन लोगे जी, हाँ? तुमने कल्पना को वास्तविकता बनाने की हिम्मत की है बिहारी...पर अब तुम देखो, कि मई कैसे तुम्हारी वास्तविकता को कल्पना बनाती।

(मद्रासन बुजु के गले को जोर से दबाती है। बुजु दर्द में चीखता है। गुल्ला और चिनामा मंच पर प्रकट होते हैं।)

चिनामा: नहीं, मैडमजी! भगवान के लिए रुक जाइए!

(मद्रासन घबराते हुए झट से बुजु को छोड़ती है। बुजु भागकर चिनामा और गुल्ला के पास आकर खड़ा हो जाता है।)

मद्रासन: **(गुस्से में)** अय्यो...तो अब यह दो कौड़ी का दरवान भी तुम दोनों के साथ शामिल हो गया जी?

बुजु: **(हाँफते हुए)** नहीं मद्रासन...तुम हम लोगों को गलत समझ रही हो...हम लोगों ने यह नाटक बस तुम्हारी जान बचाने के लिए किया था। देखो मद्रासन... अगर तुम मणि नहीं देना चाहती हो तो मत दो! लेकिन मेरी एक बात मान लो, कि अब उस मणि से और कुछ मत माँगना। वह मणि तुम्हारी हर इच्छा पर तुम्हारे

जीवन के दस साल खा रही है। इसलिए मेरी बात मानो और इस मणि को त्याग दो, मद्रासन, नहीं तो तुम्हारी मौत भी हो सकती है।

मद्रासन: **(ताली बजाते हुए जोर-जोर से हँसती है।)** वाह...बिहारी, वाह! मानना पड़ेगा तुमको, वाह! पहले तुमने मेरे साथ प्यार का नाटक करके मेरा से मेरा पत्थर चुराने की कोशिश की, फिर एलियन बनकर मेरे से मेरा पत्थर को लूटना चाहा, और अब! जब तुम्हारा सब प्लान फेल हो गया जी, तो तुम मेरेको मेरी मउत का डर दिखाकर मेरे से मेरा पत्थर छीनना चाहता।

बुजु: अरे मद्रासन! अपनी अक्ल की आँखें खोल और बात को समझने की कोशिश कर! यह कोई प्लान नहीं है। भोले बाबा की कसम! मैं सच कह रही हूँ।

(वह अपनी गर्दन दाईं ओर घूमता है और चिनामा को अपनी सोच में डूबा पाता है। चिढ़कर।)

अरे तुम भी कुछ बोलो न चिनामा!

चिनामा: **(सचेत होते हुए)** हाँ, मैडमजी, साबजी सच कह रहे हैं। दरअसल, यह मेरी ही गलती है; मुझे आपको यह सब बातें पहले ही बता देनी चाहिए थीं। मैडमजी, वह पत्थर असल में 'विष-मणि' है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति की आयु कम होते-होते उसकी मौत हो जाती है। इसीलिए मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ, मैडमजी, कि उस मणि से और कोई इच्छा मत माँगिएगा।

मद्रासन: वाह! क्या कहानी रची है तुम लोगों ने, इस पर तो नाटक बनना चाहिए।

गुल्ला: **(बुजु की बाईं ओर से)** नहीं मादाम! बुजु और चिनामा दादा सच कह रहे हैं! सच में आपकी जान को खतरा है मादाम। हमारी बात मानिए और वह मणि आप चिनामा दादा को वापस दे दीजिए! और फौरन हमारे साथ चलकर खुद को नेवले से चुसवाइए! हमारे गाँव के बड़े-बुजुर्ग कहते थे...कि नाग मणि को पास रखने से शरीर में जहर फैल जाता है।

(मद्रासन ठहाके मारती है। बुजु गुल्ला को गुस्से से देखता है।)

बुजु: चुप कर, गुल्ला! क्या बकवास कर रहा है?

गुल्ला: अरे दादा! हम सच कह रहे हैं...

(बुजु अपनी आँखे बड़ी करता है, गुल्ला चुप हो जाता है। बुजु वापस मद्रासन को निराशाजनक नजर से देखता है।)

यह मद्रासन ऐसे नहीं मानेगी। हमें अब 'प्लान-बी' को अंजाम देना होगा।

(तीनों मर्द मद्रासन को तीखी नजरों से देखने लगते हैं।)

मद्रासन: **(घबराते हुए)** अय्यो...तुम तीनों मेरेको यु शिकारी भरी नजरों से क्यों देखता जी?

बुजु: अभी पता चल जाएगा मद्रासन। गुल्ला...! जाओ और जाकर मद्रासन को किडनैप कर लो!

(गुल्ला अपना सीना ताने मद्रासन के पास आता है और उसके कंधों को पकड़ लेता है। मद्रासन गुल्ला के पेट पर एक जोरदार मुक्का मारती है, जिससे गुल्ला दर्द में चीखता हुआ वापस बुजु और चिनामा के पास लौट आता है।)

मद्रासन: **(अपनी मुट्ठी कसती हुई)** आयो, एक नारी सब पर भारी! तुम तीन क्या...तीन सौ मर्द भी मिलकर मेरेको पकड़ नहीं पाओगे जी।

गुल्ला: दादा, अब तो बात मर्दानगी पर आ गई है, अब क्या करें?

बुजु: अब हम लोग 'प्लान-सी' को अंजाम देंगे।

चिनामा: पर प्लान 'सी' क्या है साबजी?

बुजु: अब हम तीनों मिलकर मद्रासन को किडनैप करेंगे—आक्रमण...!

(तीनों मर्द अपने हाथों को फैलाकर मद्रासन की ओर दौड़ते हैं। मद्रासन गुलाटी मारती हुई मंच के दूसरे भाग पर जाकर आक्रामक मुद्रा में खड़ी

हो जाती है। तीनों मर्द वापस दौड़कर मद्रासन को तीन तरफ से घेर लेते हैं—गुल्ला और चिनामा लपककर मद्रासन के हाथों को पकड़ लेते हैं और उसे पीठ के बल मंच पर पटक देते हैं। बुजु तुरंत मद्रासन के छटपटाते पैरों को पकड़ लेता है।)

बुजु: (कंपित स्वर में) मेरी बात मानो और मुझे वह मणि दे दो मद्रासन...!

मद्रासन: बचाओ, बचाओ!

गुल्ला: अरे दादा, मादाम का मुँह बंद कीजिए।

(बुजु फौरन मद्रासन के चेहरे के पास आकर उसका मुँह बंद कर देता है। मद्रासन बुजु की उँगलियों को अपने दांतों के बीच लाती है—अपने जकड़े हाथों से गुल्ला और चीनामा की पिंडलियों को पकड़ती है—और फिर एक साथ तीनों को बेरहमी से काटती है। तीनों मर्द दर्द से छटपटाते हुए मंच के बीच में आ जाते हैं। मद्रासन जल्दी से उठकर पीछे टंगे जाल को खींचती है और तीनों के ऊपर फेंक देती है। इसी के साथ मंच पर अँधेरा हो जाता है।)

(कुछ देर बाद बुजु, गुल्ला और चिनामा की चीख के साथ मंच के बीच प्रकाश उभरता है। तीनों मर्द जाल के अंदर मुर्गे की तरह तड़प रहे हैं। घर की सारी खिड़कियाँ और दरवाजे बंद हैं। हल्की घड़ी की धड़कन गूँज रही है। मद्रासन अंधेरे और प्रकाश के बीच सोफे पर लेटकर तेज़ श्वास ले रही है।)

बुजु: **(हाँफते हुए)** अरे मद्रासन...हम लोगों को बाहर निकालो...मेरा दम घुट रहा है, बचाओ...बचाओ...

गुल्ला: **(रोते हुए)** मादाम...! मादाम समझने की कोशिश कीजिए...हम लोग तो बस आपकी जान बचाना चाहते थे, माँ कसम!

चिनामा: मैडमजी! आप यह अच्छा नहीं कर रही हैं। इस मणि को त्याग दीजिए, मैडमजी! यह मणि आपकी बुद्धि में विष घोल रही है। आप पहले से ही नफरत और बदले की गुलाम हैं, मैडमजी। इस मणि को अपने ऊपर हावी मत होने दीजिए, वरना अंजाम बहुत बुरा होगा।

मद्रासन: **(दाँत निपोरते हुए)** अय्यो...खुद जाल के अंदर फँसा है और कहता है कि मेरा अंजाम बुरा होगा।

चिनामा: हम लोग तो इस जाल से छूट जाएँगे, मैडमजी, पर समय रहते अगर आपने हम लोगों की बात नहीं मानी, तो फिर आप खुद को अपनी मौत के जाल से नहीं छुड़ा पाएँगी।

मद्रासन: **(गुस्से में उठकर बैठती है।)** अय्यो, बंद करो अपनी यह बकवास कहानी! मेरे सिर में दर्द होता जी।

बुजु: अरे साली अकाल की अंधी, मद्रासन! कहानी नहीं है! बात को समझो और हम लोगों को इस जाल से निकालो! मैं साँस नहीं ले पा रहा हूँ...

गुल्ला: छोड़ दीजिए मादाम! हम तीनों के ऊपर थोड़ा रहम कीजिए...

चिनामा: मैडमजी! क्या आपके अंदर की ममता पूरी मर चुकी है? जो आपको बचाने आए थे, उन्हें ही आप घुट-घुटाकर मार रही हैं। अरे कम से कम साबजी को तो छोड़ दीजिए...वरना वह मर जाएँगे!

मद्रासन: **(कुढ़ता से)** मरता है तो मर जाए!!

(एक गहरी साँस खींचने के बाद।)

वैसे भी मई यही सोच रही थी, कि मई तुम लोगों के साथ क्या करे? और तुमने मेरेको अच्छा सुझाव दिया जी।

(वह व्यंग्यपूर्ण हँसते हुए सोफे से उठती है और प्रकाश में आकर जाल का चक्कर लगाने लगती है।)

...तुम तीनों अब मेरे लिए बहुत बड़ा खतरा बन चुके हो जी। और मयने अगर आज तुम तीनों को छोड़ दिया...तो कल तुम तीन, मेरा जादुई पत्थर पाने के लिए...मेरेको ही मौत के मुँह में धकेल सकते जी। और मई इतने बड़े ख़तरे को अनदेखा नहीं कर सकती जी। मई इतनी जल्दी मरने वाली नहीं! अभी तो मेरे 'पलिवांकुम' (प्रतिशोध) की ज्वाला बस भड़की है! जब तक मई इस चिंगारी को आग बनाकर इन मर्दों को तड़पा-तड़पा कर जला न देती! तब तक मेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता जी।

बुजु: (गिड़गिड़ाते हुए) मद्रासन...मैं तुम्हारे सामने हाथ जोड़ता हूँ, ऐसा मत करो।

(वह बुजु के पास आकर अपने घुटनों पर बैठती है।)

मद्रासन: अय्यो बिहारी! तुम क्यों रोता जी? तुमको तो खुश होना चाहिए...कि मई अपना बदला तुम लोगों से शुरू कर रही जी। और तुम एकदम चिंता मत करो जी, मई तुम्हारे इस 'थियागम' (बलिदान) के लिए तुमको बहुत सुकून वाली मउत देगी जी।

(वह निर्दयतापूर्वक हँसती है।)

चलो! मरने से पहले मई तुम्हारी और गुला की आखिरी इच्छा पूरी कर देती जी। तुम दोनों को यह जानने की बहुत खुजली थी न...कि मयने वह पत्थर कहाँ छुपाया जी?

(वह अपने हाथों को उठाकर अपने सिर के ऊपर बँधी जूड़े को खोलती है, और मणि बाहर निकालकर बुजु को दिखाती है।)

यह देखो बिहारी...यह पत्थर नहीं—तुम तीनों का काल है।

(मंच के बाएँ तरफ एक रोशनी का दायरा प्रकाशमान होता है। मद्रासन हँसते हुए खड़ी होती है और दायरे के अंदर आकर खड़ी हो जाती है।)

चिनामा: **(ऊँचे स्वर में)** नहीं, मैडमजी! कोई इच्छा मत माँगिएगा!

गुल्ला: **(रोते हुए)** मादाम...कुछ मत कहिएगा...वरना हम सब मर जाएँगे!

बुजु: **(धीमी स्वर में)** मैं मर रहा हूँ...मैं मर रहा हूँ...

(मद्रासन पत्थर को अपनी मुट्ठी में कसती है,और अपनी आँखें बंद कर लेती है।)

गुल्ला: रुक जाइए मादाम!

चिनामा: मैडमजी...ऐसा मत कीजिए!

बुजु: बचाओ, बचाओ।

मद्रासन: मेरी इच्छा—कि बुजु, गुल्ला और चिनामा की मउत हो जाए!

(तीनों मर्द की आवाज़ें धीमी होते-होते वापस दौड़ते समय की स्वर गूँज उठती है। मद्रासन हँसती है---पर अगले ही पल अचानक उसे अपने अंदर कुछ अजीब सा महसूस होता है---उसकी आँखें पानी से भर आती हैं---उसके होंठ थरथराने और हाथ-पैर काँपने लगते हैं---अगले क्षण वह लड़खड़ाते हुए मंच पर गिर जाती है और बिना पानी मछली की तरह फड़फड़ाने लगती है---उसकी लाल होती आँखों से आँसू छलक रहे हैं---उसके ठंडे हो रहे चेहरे पर भय है, जैसे उसकी तरफ दो यमदूत चलकर आ रहे हों---वह दर्शकों की ओर देखती है।)

मद्रासन: **(धीमे स्वर में)** मेरेको माफ कर दीजिएगा---

(मद्रासन अपनी आँखें बंद कर लेती है। मंच धीरे-धीरे अँधेरे में खो जाता है।)

~ दृश्य — १२ ~

(मंच प्रकाशित होता है। मंच के पीछे, एक टेबल के ऊपर, मद्रासन की तस्वीर चंदन के हार के साथ सजी रखी हुई है। बुजु मंच के बीच में दो सूटकेस के साथ खड़ा है और भावुकता से मद्रासन की तस्वीर को देख रहा है। चिनामा अपने हाथों में ढेर सारे सफेद चादर के साथ मंच पर प्रवेश करता है, और अपना गला साफ़ करते हुए शांति तोड़ता है।)

चिनामा: एहम्म...नीचे कैब आ गया है साबजी।

बुजु: **(अपनी गीली आँखों को छुपाते हुए)** हाँ, चलो।

(वह अपने दोनों सूटकेस को उठाता है और चिनामा के पास आकर खड़ा हो जाता है।)

चिनामा: क्या बात है साबजी? आप परेशान लग रहे हैं। क्या आप अभी तक उस घटना से उबर नहीं पाए हैं?

बुजु: मौत को मैंने इतने करीब से देखा है चिनामा। अब तुम ही बताओ? कैसे कोई इतनी भयानक घटना से इतनी जल्दी उबर सकता है? इस हादसे को बीते एक महीना हो चुका है। पर चिनामा, ऐसा लगता है कि जैसे वह हादसा कल ही हुआ हो। हर रात मेरे सपने में मद्रासन का चेहरा मुझसे मदद की पुकार लगाता है, मुझसे माफी माँगता है।

(वह रोने लगता है।)

...लाख कोशिशों के बाद भी एक जान चली ही गई चिनामा।

चिनामा: जो कुछ हुआ उसमें आपकी कोई गलती नहीं थी, साबजी। उल्टा आपने तो मैडमजी को बचाने की पूरी कोशिश की थी।

बुजु: पर चिनामा? वह हादसा ही क्यों हुआ? क्या इसके पीछे का कारण मैं नहीं हूँ? कहीं न कहीं मैं भी इस हादसे का जिम्मेदार हूँ चिनामा। मेरी ही गलती थी। मुझे यहाँ आते ही उस खिड़की को बंद कर देना चाहिए था। या मुझे मद्रासन से झगड़ना ही नहीं चाहिए था। अगर मैंने अपनी जुबान पर थोड़ा काबू रखा होता, तो शायद यह नौबत ही नहीं आती। यह सब ख्याल मुझे अंदर ही अंदर खा रहा है चिनामा! ...ऐसा क्यों होता है चिनामा? कि किसी के चले जाने के बाद ही अपनी गलतियों का एहसास होता है?

चिनामा: एहि जीवन है, साबजी, 'यहाँ रेलगाड़ी छूटने के बाद लोगों को एहसास होता है, कि वे अब तक गलत स्टेशन पर खड़े थे।'

गुल्ला: **(विंग्स के अंदर से, ऊँचे स्वर में)** आपने ठीक कहा चिनामा दादा...!

(वह अपने हाथों में एक गठरी थामे मंच पर प्रवेश करता है, और दोनों के पास आकर खड़ा हो जाता है। बुजु अपने आँसू पोंछता है। गुल्ला अनदेखा करते हुए।)

पर हमारे गाँव के बड़े-बुजुर्ग यह भी कहते थे...'कि हर गलत स्टेशन हमें एक नई गाड़ी पकड़ने का अवसर देता है!' इसलिए आज से हमने यह चोरी वाली गाड़ी छोड़ दी है...और ईमानदारी वाली पकड़ ली है! बहुत हो गई शहरों में नौकर वाली जिंदगी। अब सोच रहे हैं, कि वापस गाँव चले जाएँ, और काली माँ का नाम लेकर वहीं अपने खेत में फल और सब्जी का धंधा शुरू करें। और फिर शादी करके माँ और बाबा के साथ वहीं सुकून से रहें। बाकी जो होगा, देखा जाएगा!

चिनामा: बहुत अच्छा सोचा है तुमने गुल्ला। और साबजी, आप?

बुजु: मैं भी अपना काम वगैरह समेटकर कुछ दिनों के लिए अपने घर जा रहा हूँ, चिनामा। परिवार की बहुत याद आ रही है। और कुछ दिन उनके साथ रहूँगा तो शायद इन सब से उबर पाऊँ। उसके बाद...देखते हैं? किसी और शहर में अपना काम जमाएँगे। यह बम्बई शहर कुछ जमा नहीं।

चिनामा: भगवान आप दोनों की रक्षा करें। आप दोनों बहुत याद आएँगे, साबजी।

(गुल्ला बुजु को इशारा करता है, जिससे चिनामा देख लेता है।)

चिनामा: क्या हुआ गुल्ला? तुम कुछ कहना चाहते हो?

गुल्ला: **(हिचकिचाते हुए)** वो...चिनामा दादा, वो...बुजु दादा, आप पूछिए न!

बुजु: वो...चिनामा?

चिनामा: आप भी क्या एक दरवान से घबड़ा रहे हैं, साबजी, कहिए तो सही।

बुजु: चिनामा, तुमने अब तक बताया नहीं? कि किसने हम लोगों को जीवनदान दिया?

(एक क्षण मौन के बाद।)

...और मद्रासन की सभी इच्छाओं को उल्टा किया?

गुल्ला: **(जल्दी से)** और मणि का क्या हुआ?!

चिनामा: मणि मेरे पास सुरक्षित है गुल्ला। और साबजी, रहा सवाल कि किसने मैडमजी की इच्छाओं को उल्टा किया, और हम सब की जान बचाई—तो मुझे भी अब तक इस फरिश्ते के बारे में पता नहीं चला है।

(बुजु और गुल्ला निराश होकर एक-दूसरे को देखते हैं।)

बुजु: ठीक है चिनामा। अब हमें चलना चाहिए। अपना ध्यान रखना।

चिनामा: आप दोनों भी अपना ख्याल रखिएगा। और साबजी, मेरी आप दोनों से एक विनती है।

बुजु: बोलो चिनामा।

चिनामा: इस मणि के बारे में किसी से कुछ मत कहिएगा साबजी। इस राज़ को राज़ ही रहने दीजिएगा।

(बुजु और गुल्ला अपना सिर हिलाते हैं, और फिर बाहर की तरफ बढ़ने लगते हैं। बुजु दरवाजे के पास आकर रुकता है, और पीछे मुड़कर एक आखिरी बार मद्रासन की तस्वीर को देखता है।)

बुजु: (हल्की मुस्कान के साथ) मुझे यह 'पड़ोसन' हमेशा याद रहेगी।

(बुजु और गुल्ला प्रस्थान करते हैं। उनके जाने के बाद, चिनामा घर के सभी फर्नीचर को सफेद चादरों से ढक देता है, और फिर मंच के बीच बैठकर मद्रासन की तस्वीर को देखते हुए कुछ सोचने लगता है। थोड़ी देर बाद, वह अपने पैंट की जेब से एक डायरी और पेन निकालता है, और डायरी खोलकर अपनी लिस्ट से एक नाम को काटता है।)

चिनामा: (धीमे स्वर में) अगली है...'अनामिका शून्य'—अवन्ति अपार्टमेंट्स।

(वह अपनी शर्ट की जेब से अपना फोन निकालता है और एक नंबर डायल करता है।)

हैलो, अवन्ति अपार्टमेंट्स? हाँ, राम-राम, साबजी! क्या आपकी सोसाइटी में कोई सिक्योरिटी की नौकरी खाली है? ...तो फिर ठीक है, मैं शाम में आता हूँ—धन्यवाद साबजी!

(वह फोन काटकर सभी चीजों को वापस अपनी जेब में रखता है और फिर अनुकम्पापूर्ण दृष्टि से मद्रासन की तस्वीर को देखता है।)

मुझे माफ कर दीजिएगा मैडमजी।

(वह मंच से उठता है, घर की सभी बत्तियाँ बुझाकर घर को अँधेरा कर देता है, और फिर बाहर निकलकर घर का दरवाजा बंद कर देता है।)

(मंच पर धीरे-धीरे अँधेरा होने के साथ नाटक समाप्त होता है।)

।। बने रहिए...चिनामा 'विष-मणि' के साथ फिर लौटेगा ।।